A story about milk by an anonymous story lover
Caution:(older woman, younger man, oral, anal, milking, mother daughter incest)

घरका दूध

———————

"बाबूजी, काटो मत, कितनी जोर से काटते हो? खा जाओगे क्या मेरी चूंची?" गुस्से से मंजू बाई चिल्लाई और फ़िर हंसने लगी.

मैं उस पर चढ़कर उसे चोद रह था और उसकी एक चूंची मुंह में लेकर चूस रहा था. उसका छरहरा सांवला शरीर मेरे नीचे दबा था और उसकी मजबूत टांगें मेरी कमर के इर्द गिर्द लिपटी हुई थीं. मैं इतनी मस्ती में था कि वासना सहन नहीं होने से मैंने मंजू के निपल को दांतों में दबाकर चबा डाला था और वह चिल्ला उठी थी. मैंने उसकी बात को अनसुनी करके उसकी आधी चूंची मुंह में भर ली और फ़िर से उसे दांतों से कस कर काटने लगा.

उसके फ़िर से चीखने के पहले मैंने अपने मुंह से उसकी चूंची निकाली और उसके होंठों को अपने होंठों में दबाकर उसकी आवाज बंद कर दी. उसके होंठों को चूसते हुए मैं अब उसे कस कर चोदने लगा. वह भी 'अं ऽ अं ऽ' की दबी आवाज निकालते हुए मुझसे चिपट कर छटपटाने लगी. यह उसके झड़ने के करीब आने की निशानी थी.

दो तीन और धक्कों के बाद ही उसके बंद मुंह से एक दबी चीख निकली और उसने अपनी जीभ मेरे मुंह में डाल दी. उसका शरीर कड़ा हो गया और वह थरथराने लगी. उसकी चूत में से अब ढेर सा पानी बह रहा था. मैंने भी तीन चार और करारे धक्के लगाये और अपना लंड उसकी बुर में पूरा अंदर पेल कर झड़ गया.

थोड़ी देर बाद मैं लुढ़क कर उसके ऊपर से अलग हुआ और लेट कर सुस्ताने लगा. मंजू बाई उठकर अपने कपड़े पहनने लगी. उसकी चूंची पर मेरे दांतों के गहरे निशान बन गये थे, उन्हें सहलाते हुए वह मुझसे शिकायत करती हुई बोली. "बाबूजी, क्यों काटते हो मेरी चूंची को बार बार, मुझे बहुत दुखता है, परसों तो तुमने थोड़ा खून भी निकाल दिया था!" उसकी आवाज में शिकायत के साथ साथ हल्का सा नखरा भी था. उसे दर्द तो हुआ होगा पर मेरी उस दुष्ट हरकत पर मजा भी आया था.

मैंने कोई जवाब नहीं दिया, बस मुस्कराते हुए उसे बांहों में खींचकर उसके सांवले होंठों का चुंबन लेते हुए सोचने लगा कि क्या मेरी तकदीर है जो इतनी गरम चुदैल औरत मेरे पल्ले पड़ी है. एक नौकरानी थी, अब मेरी प्रेमिका बन गयी थी मंजू बाई! यह अफ़साना कैसे शुरू हुआ उसे मैं याद कर रहा था.

****

मैं कुछ ही महने पहले यहां नौकरी पर आया था. बी ई करने के बाद यह मेरी पहली नौकरी थी. फ़ैक्टरी एक छोटे शहर के बाहर कैमोर गांव के पास थी, वहां कोई आना पसंद नहीं करता था इसलिये एक तगड़ी सैलरी के साथ कंपनी ने मुझे कॉलोनी में एक बंगला भी रहने को दे दिया था. कॉलोनी शहर से दूर थी और इसलिये नौकरों के लिये छोटे क्वार्टर भी हर बंगले में बने थे.

मैं अकेला ही था, अभी शादी नहीं हुई थी. मेरे बंगले के क्वार्टर में मंजू बाई पहले से रहती थी. उस बंगले में रहने वाले लोगों के घर का सारा काम काज करने के लिये कंपनी ने उसे रखा था. वह पास के ही गांव की थी पर उसे फ़्री में रहने के लिये क्वार्टर और थोड़ी तनखा भी कंपनी देती थी इसलिये वह बंगले में ही रहती थी.

वैसे तो उसका पति भी था. मैंने उसे बस एक दो बार देखा था. शायद उसका और कहीं लफ़ड़ा था और शराब

की लत भी थी, इसलिये मंजू से उसका खूब झगड़ा होता था. वह मंजू की गाली गलौज से घबराता था इसलिये अक्सर घर से महनों गायब रहता था.

मंजू मेरे घर का सारा काम करती थी और बड़े प्यार से मन लगाकर करती थी. खाना बनाना, कपड़े धोना, साफ़ सफ़ाई करना, मेरे लिये बाजार से जरूरत की सब चीजें ले आना, ये सब वही करती थी. मुझे कोई तकलीफ़ नहीं होने देती थी. उसकी इमानदारी और मीठे स्वभाव के कारण उसपर मेरा पूरा विश्वास हो गया था. मैंने घर की पूरी जिम्मेदारी उसपर डाल दी थी और उसे ऊपर से तीन सौ रुपये और देता था.

उसके कहने से मैंने बंगले के बाथरूम में उसे नहाने धोने की इजाजत भी दे दी थी क्योंकि नौकरों के क्वार्टर में बाथरूम ढंग का नहीं था. गरीबी के बावजूद साफ़ सुथरा रहने का उसे शौक था और इसीलिये बंगले के बाथरूम में नहाने की इजाजत मिलने से वह बहुत खुश थी. दिन में दो बार नहाती और हमेशा एकदम साफ़ सुथरी रहती, नहीं तो नौकरानियां अक्सर इतनी सफ़ाई से नहीं रहतीं. मुझे वह बाबूजी कहकर बुलाती थी और मैं उसे मंजू बाई कहता था. मेरा बर्ताव उससे एकदम अच्छा और सभ्य था, नौकरों जैसा नहीं.

यहां आये दो महने हो गये थे. उन दो महनों में मैंने मंजू पर एक औरत के रूप में ज्यादा ध्यान नहीं दिया था. मुझे उसकी उमर का भी ठीक अंदाज नहीं था, हां मुझ से काफ़ी बड़ी है यह मालूम था. इस वर्ग की औरतें अक्सर तीस से लेकर पैंतालीस तक एक सी दिखती हैं, समझ में नहीं आता कि उनकी असली उमर क्या है. कुछ जल्दी बूढ़ी लगने लगती हैं तो कुछ पचास की होकर भी तीस पैंतीस की दिखती हैं.

मंजू की उमर मेरे खयाल से सैंतीस अड़तीस की होगी. पर लगती थी जैसे तीस साल की जवान औरत हो. शरीर एकदम मजबूत, छरहरा और कसा हुआ था. काम करने की उसकी फ़ुरती देखकर मैं मन ही मन उसकी दाद देता था कि क्या एनर्जी है इस औरत में. कभी कभी वह पान भी खाती थी और तब उसके सांवले होंठ लाल हो जाते. मुझे पान का शौक नहीं है पर जब वह पास से गुजरती तो उसके खाये पान की सुगंध मुझे बड़ी अच्छी लगती थी.

अब इतने करीब रहने के बाद यह स्वाभाविक था कि धीरे धीरे मैं उसकी तरफ़ एक नौकरानी ही नहीं, एक औरत की तरह देखने लग जाऊं. मैं भी तेईस साल का जवान था, और जवानी अपने रंग दिखायेगी ही. काम खतम होने पर घर आता तो कुछ करने के लिये नहीं था सिवाय टी वी देखने के या पढ़ने के. कभी कभी क्लब हो आता था पर मेरे अकेलेपन के स्वभाव के कारण अक्सर घर में ही रहना पसंद करता. मंजू काम करती रहती और मेरी नजर अपने आप उसके फ़ुरतीले बदन पर जाकर टिक जाती.

ऐसा शायद चलता रहता पर तभी एक घटना ऐसी हुई कि मंजू के प्रति मेरी भावना अचानक बदल गयी.

एक दिन बैडमिन्टन खेलते हुए मेरे पांव में मोच आ गयी. शाम तक पैर सूज गया. दूसरे दिन काम पर भी नहीं जा सका. डाक्टर की लिखी दवा ली और मरहम लगाया. पर दर्द कम नहीं हो रहा था. मंजू मेरी हालत देख कर मुझसे बोली. "बाबूजी, पैर की मालिश कर दूं?"

मैंने मना किया. मुझे भरोसा नहीं था, डरता था कि पैर और सूज न जाये. और वैसे भी एक औरत से पैर दबवाना मुझे ठीक नहीं लग रहा था. वह जिद करने लगी, मेरे अच्छे बर्ताव की वजह से मुझको अब वह बहुत मानती थी और मेरी सेवा का यह मौका नहीं छोड़ना चाहती थी "एकदम आराम हो जायेगा बाबूजी, देखो तो. मैं बहुत अच्छा मालिश करती हूं, गांव में तो किसी को ऐसा कुछ होता है तो मुझे ही बुलाते हैं"

उसके चेहरे के उत्साह को देखकर मैंने हां कर दी, कि उसे बुरा न लगे. उसने मुझे पलंग पर लिटाया और जाकर गरम करके तेल ले आयी. फ़िर पाजामा ऊपर करके मेरे पैर की मालिश करने लगी. उसके हाथ में सच में जादू था. बहुत अच्छा लग रहा था. काम करके उसके हाथ जरा कड़े हो गये थे फ़िर भी उनका दबाव मेरे पैर को बहुत

आराम दे रहा था.

पास से मैंने पहली बार मंजू को ठीक से देखा. वह मालिश करने में लगी हुई थी इसलिये उसका ध्यान मेरे चेहरे पर नहीं था. मैं चुपचाप उसे घूरने लगा. सादे कपड़ों में लिपटे उसके सीधे साधे रूप के नीचे छुपी उसकी मादकता मुझे महसूस होने लगी.

दिखने में वह साधारण थी. बाल जूड़े में बांध रखे थे उनमें एक फ़ूलों की वेणी थी. थी वह सांवली पर उसकी त्वचा एकदम चिकनी और दमकती हुई थी. माथे पर बड़ी बिंदी थी और नाक में नथनी पहने थी. वह गांव की औरतों जैसे धोती की तरह साड़ी पहने थी जिसमें से उसके चिकने सुडौल पैर और मांसल पिंडलियां दिख रही थीं. चोली और साड़ी के बीच दिखती उसकी पीठ और कमर भी एकदम सपाट और मुलायम थी. चोली के नीचे शायद वह कुछ नहीं पहनती थी क्योंकि कटोरी से तेल लेने को जब वह मुड़ती तो पीछे से उसकी चोली के पतले कपड़े में से ब्रा का कोई स्ट्रैप नहीं दिख रहा था.

आंचल उसने कमर में खोंस रखा था और उसके नीचे से उसकी छाती का हल्का उभार दिखता था. उसके स्तन ज्यादा बड़े नहीं थे पर ऐसा लगता था कि जितने भी हैं, काफ़ी सख्त और कसे हुए हैं. उसके उस दुबले पतले छरहरे पर एकदम स्वस्थ और कसे हुए चिकने शरीर को देखकर पहली बार मुझे समझ में आया कि जब किसी औरत को 'तन्वंगी' कहते हैं, याने जिसका बदन किसी पेड़ के तने जैसा होता है, तो इसका क्या मतलब है.

उसके हाथों के स्पर्श और पास से दिखते उसके सादे पर स्वस्थ रूप ने मुझपर ऐसा जादू किया कि जो होना था वह हो कर रहा. मेरा लंड सिर उठाने लगा. मैं परेशान था, उसके सामने उसे दबाने को कुछ कर भी नहीं सकता था. इसलिये पलट कर पेट के बल सो गया. वह कुछ नहीं बोली, पीछे से मेरे टखने की मालिश करती रही. अब मैं उसके बारे में कुछ भी सोचने को आजाद था. मैं मन के लड्डू खाने लगा. मंजू बाई नंगी कैसी दिखेगी! उसे भींच कर उसे चोदने में क्या मजा आयेगा! मेरा लंड तन्ना कर खड़ा हो गया.

दस मिनिट बाद वह बोली. "अब सीधे हो जाओ बाबूजी, पैर मोड़ कर मालिश करूंगी, आप एकदम सीधे चलने लगोगे"

मैं आनाकानी करने लगा. "हो गया, बाई, अब अच्छा लग रहा है, तुम जाओ." आखिर खड़ा लंड उसे कैसे दिखाता! पर वह नहीं मानी और मजबूर होकर मैंने करवट बदली और कुरते से लंड के उभार को ढांक कर मन ही मन प्रार्थना करने लगा कि उसे न दिखे. वैसे कुरते में भी अब तंबू बन गया था जो छुपने की कोई गुंजाइश नहीं थी.

वह कुछ न बोली और पांच मिनिट में मालिश खतम करके चली गयी. "बस हो गया बाबूजी, अब आराम करो आप" कमरे से बाहर जाते जाते मुस्कराकर बोली "अब देखो बाबूजी, तुम्हारी सारी परेशानी दूर हो जायेगी" उसकी आंखों में एक चमक सी थी. मैं सोचता रहा कि उसके इस कहने में और कुछ मतलब तो नहीं छुपा.

उसकी मालिश से मैं उसी दिन चलने फ़िरने लगा. दूसरे दिन उसने फ़िर एक बार मालिश की, और मेरा पैर पूरी तरह से ठीक हो गया.इस बार मैं पूरा सावधान था और अपने लंड पर मैंने पूरा कंट्रोल रखा. न जाने क्यों मुझे लगा कि जाते जाते मंजू बाई कुछ उदास सी लगी.

अब उसको देखने की मेरी नजर बदल गयी थी. जब घर में होता तो उसकी नजर बचाकर उसके शरीर को घूरने का मैं कोई मौका नहीं छोड़ता. खाना बनाते समय जब वह किचन के चबूतरे के पास खड़ी होती तो पीछे से उसे देखना मुझे बहुत अच्छा लगता, उसकी चिकनी पीठ और गर्दन मुझ पर जादू सा कर देती, मैं बार बार किसी बहाने से किचन के दरवाजे से गुजरता और मन भर कर उसे पीछे से देखता. जब वह चलती तो मैं उसके चूतड़ों और पिंडलियों को घूरता. उसके चूतड़ छोटे थे पर एकदम गोल और सख्त थे. जब वह अपने पंजों पर खड़ी होकर

ऊपर देखते हुए कपड़े सुखाने को डालती तो उसके छोटे मम्मे तन कर उसके आंचल में से अपनी मस्ती दिखाने लगते.

उसे भी मेरी इस हालत का अंदाजा हो गया होगा, आखिर मालिश करते समय कुर्ते के नीचे से मेरा खड़ा लंड उसने देखा ही था. पर नाराज होने और बुरा मानने के बजाय वह भी अब मेरे सामने कुछ कुछ नखरे दिखाने लगी थी. बार बार आकर मुझसे बातें करती, कभी बेमतलब मेरी ओर देखकर हल्के से हंस देती. उसकी हंसी भी एकदम लुभावनी थी, हंसते समय उसकी मुस्कान बड़ी मीठी होती और उसके सफ़ेद दांत और गुलाबी मसूड़े दिखते क्योंकि उसका ऊपरी होंठ एक खास अंदाज में ऊपर की ओर मुड़कर और खुल जाता.

मैं समझ गया कि शायद वह भी चुदासी की भूखी थी और मुझे रिझाने की कोशिश कर रही थी. आखिर उस जैसी गरीब नौकरानी को मेरे जैसा उच्च वर्गीय नौजवान कहां मिलने वाला था? उसका पति तो नालायक शराबी था ही, उससे संबंध तो मंजू ने कब के तोड़ लिये थे. मुझे पूरा यकीन हो गया कि बस मेरे पहल करने की देर है, यह शिकार खुद मेरे पंजे में आ फ़ंसेगा.

पर मैंने कोई पहल नहीं की. डर था कुछ लफ़ड़ा न हो जाये, और अगर मैंने मंजू को समझने में भूल की हो तो फ़िर तो बहुत तमाशा हो जायेगा. वह चिल्ला कर पूरी कॉलोनी सिर पर न उठा ले, नहीं तो कंपनी में मुंह दिखाने की जगह न मिलेगी.

पर मंजू ने मेरी नजर की भूख पहचान ली थी. अब उसने आगे कदम बढ़ाना शुरू कर दिया. वह थी बड़ी चालाक, मेरे खयाल से उसने मन में ठान ली थी कि मुझे फ़ंसा कर रहेगी. अब वह जब भी मेरे सामने होती, तो उसका आंचल बार बार गिर जाता. खास कर मेरे कमरे में झाड़ू लगाते हुए तो उसका आंचल गिरा ही रहता. वैसे ही मुझे खाना परोसते समय उसका आंचल अक्सर खिसक जाता और वैसे में ही वह झुक झुक कर मुझे खाना परोसती. अंदर ब्रा तो वह पहनती नहीं थी इसलिये ढले आंचल के कारण उसकी चोली के ऊपर के उसके छोटे कड़े मम्मों और उनकी घुंडियों का आकार साफ़ साफ़ दिखता. भले छोटे हों पर बड़े खूबसूरत मम्मे थे उसके. बड़े मुश्किल से मैं अपने आप को संभाल पाता, वरना लगता तो था कि अभी उन कबूतरों को पकड़ लूं और मसल डालूं, चूस लूं.

मैं अब उसके इस मोह जाल में पूरा फ़ंस चुका था. रात को मुठ्ठ मारता तो इस तीखी नौकरानी के नाम से. उसकी नजरों से नजर मिलाना मैंने छोड़ दिया था कि उसे मेरी नजरों की वासना की भूख न दिख न जाये. बार बार लगता कि उसे उठा कर पलंग पर ले जाऊं और कचाकच चोद मारूं. अक्सर खाना खाने के बाद मैं दस मिनिट बैठा रहता, उठता नहीं था कि मेरा तन कर खड़ा लंड उसे न दिख जाये.

यह ज्यादा दिन चलने वाला नहीं था. आखिर एक शनिवार को छुट्टी के दिन की दोपहर में बांध टूट ही गया. उस दिन खाना परोसते हुए मंजू चीख पड़ी कि चींटी काट रही है और मेरे सामने अपनी साड़ी उठाकर अपनी टांगों में चींटी को ढूंढने का नाटक करने लगी. उसकी पुष्ट सुडौल सांवली चिकनी जांघें पहली बार मैंने देखीं. उसने सादी गुलाबी पैंटी पहने हुई थी. उस तंग पैंटी में से उसकी फ़ूली बुर का उभार साफ़ दिख रहा था. साथ ही पैंटी के बीच के सकरे पट्टे के दोनों ओर से घनी काली झाटें बाहर निकल रही थीं. एकदम देसी नजारा था. और यह नजारा मुझे पूरे पांच मिनिट मंजू ने दिखाया. 'उई' 'उई' करती हुई मेरी ओर देखकर हंसते हुए वह चींटी ढूंढती रही जो आखिर तक नहीं मिली.

मैंने खाना किसी तरह खतम किया और आराम करने के लिये बेडरूम में आ गया. दरवाजा उढ़काकर मैं सीधा पलंग पर गया और लंड हाथ में लेकर हिलाने लगा. मंजू की वे चिकनी जांघें मेरी आंखों के सामने तैर रही थीं. मैं हथेली में लंड पकड़कर उसे मुठियाने लगा, मानों मंजू की उन टांगों पर उसे रगड़ रहा होऊं.

इतने में बेडरूम का दरवाजा खुला और मंजू अंदर आयी. वह चतुर औरत जान बूझकर मुझे धुला पाजामा देने

का बहाना करके आयी थी. दरवाजे की सिटकनी मैं लगाना भूल गया था इसलिये वह सीधे अंदर घुस आयी. मुझे मुठ्ठ मारते देख कर वहीं खड़ी हो गयी और मुझे देखने लगी.

मैं सकते में आकर रुक गया. अब भी मेरा तन्नाया लंड मेरी मुठ्ठी में था. मंजू के चेहरे पर शिकन तक न थी, मेरी ओर देखकर हंसी और आकर मेरे पास पलंग पर बैठ गयी. "क्या बाबूजी, मैं यहां हूं आपकी हर खातिर करने को फ़िर भी ऐसा बचपना करते हो! मुझे मालूम है तुम्हारे मन में क्या है. बिलकुल अनाड़ी हो आप बाबूजी, इतने दिनों से इशारे कर रही हूं पर नहीं समझते, क्या भोंदू हो आप!"

मैं चुप था, उसकी ओर देख कर शरमा कर बस हंस दिया. अखिर मेरी चोरी पकड़ी गयी थी. मेरी हालत देख कर मंजू की आंखें चमक उठीं "मेरे नाम से सड़का लगा रहे थे बाबूजी? अरे मैं यहां आपकी सेवा में तैयार हूं और आप मुठ्ठ मार रहे हो. चलो अब हाथ हटाओ, मै दिखाती हूं ऐसे सुंदर लौड़े की पूजा कैसे की जाती है" और मेरे हाथ से लंड निकालकर उसने अपने हाथ में लिया और उसे हथेलियों के बीच रगड़ने लगी.

उन खुरदरी हथेलियों के रगड़ने से मेरा लंड पागल सा हो गया. मुझे लग रहा था कि मंजू को बांहों में भींच लूं और उस पर चढ़ जाऊं, पर उसके पहले ही उसने अचानक मेरी गोद में सिर झुकाकर मेरा सुपाड़ा मुंह में ले लिया और चूसने लगी. उसके गीले तपते मुंह और मछली सी फ़ुदकती जीभ ने मेरे लंड को ऐसा तड़पाया कि मैं झड़ने को आ गया. मैं चुप रहा और मजा लेने लगा. सोचा अब जो होगा देखा जायेगा. हाथ बढ़ाकर मैंने उसके मम्मे पकड़ लिये. क्या माल था! सेब से कड़े थे उसके स्तन.

सुपाड़ा चूसते चूसते वह अपनी एक मूठ्ठी में लंड का डंडा पकड़कर सड़का लगा रही थी, बीच में आंखें ऊपर करके मेरी आंखों में देखती और फ़िर चूसने लग जाती. उसकी आंखों में इतनी शैतानी खिलखिला रही थी कि दो मिनिट में मैं हुमक कर झड़ गया. "मंजू बाई, मुंह हटा लो, मैं झड़ने वाला हूं ओः ओः " मैं कहता रह गया पर उसने तो और लंड मुंह में ले लिया और तब तक चूसती रही जब तक मेरा पूरा वीर्य उसके हलक के नीचे नहीं उतर गया.

मैंने हांफ़ते हुए उससे पूछा "कैसी हो तुम बाई, अरे मुंह बाजू में क्यों नहीं किया, मैंने बोला तो था झड़ने के पहले!"

"अरे मैं क्या पगली हूं बाबूजी इतनी मस्त मलाई छोड़ देने को? तुम्हारे जैसा खूबसूरत लौड़ा कहां हम गरीबों को नसीब होता है! ये तो भगवान का परशाद है हमारे लिये" वह बड़े लाड़ के अंदाज में बोली. उसकी इस अदा पर मैंने उसे बाहों में जकड़ लिया और चूमने की कोशिश करने लगा पर वह छूट कर खड़ी हो गयी और खिलखिला उठी "अभी नहीं बाबूजी, बड़े आये अब चूमा चाटी करने वाले. इतने दिन तो कैसे मिट्टी के माधो बने घूमते थे, अब चले आये चिपकने. चलो मुझे जाने दो"

कपड़े ठीक करके वह कमरे के बाहर चली गयी. जाते जाते मेरे चेहरे की निराशा देखकर बोली "ऐसे मुंह मत लटकाओ मेरे राजा बाबू, मैं आऊंगी फ़िर. अभी कोई आ जायेगा तो? अब जरा सबर करो, मैं रात को आऊंगी. देखना कैसी सेवा करूंगी अपने राजकुमार जैसे बाबूजी की. अब मुठ्ठ नहीं मारना आपको मेरी कसम!"

मैं तृप्त होकर लुढ़क गया और मेरी आंख लग अयी. विश्वास नहीं हो रहा था कि इस मतवाली औरत ने अभी अभी मेरा लंड चूसा है. सीधा शाम को उठा. मन में खुशी के लड्डू फ़ूट रहे थे. क्या औरत थी! इतना मस्त लंड चूसने वाली और एकदम तीखी कटारी. कमरे के बाहर जाकर देखा तो मंजू गायब थी. अच्छा हुआ क्योंकि जिस मूड में मैं था, उसमें उसे पकड़कर जरूर उसे जबरदस्ती चोद डालता. टाइम पास करने को मैं क्लब में चला गया.

जब रात नौ बजे वापस आया तो खाना टेबल पर रखा था. मंजू अब भी गायब थी. मैं समझ गया कि वो अब

सीधे सोने के समय ही आयेगी. आखिर उसे भी अहसास होगा कि कोई रात को उसे मेरे घर में देख न ले. दिन की बात और थी. वैसे घर की चाबी उसके पास थी ही. मैं जाकर नहाया और फ़िर खाना खाकर अपने कमरे में गया. अपने सारे कपड़े निकाल दिये और अपने खड़े लंड को पुचकारता हुआ मंजू का इंतजार करने लगा.

दस बजे दरवाजा खोल कर मंजू बाई अंदर आयी. तब तक मेरा लंड सूज कर सोंटा बन गया था. बहुत मीठी तकलीफ़ दे रहा था. मंजू को देखकर मेरा लंड और थिरक उठा. उसकी हिम्मत की मैंने मन ही मन दाद दी. मैं यह भी समझ गया कि उसे भी कितनी तेज चुदासी सता रही होगी!

मंजू बाई बाहर के कमरे में सारे कपड़े उतार कर आयी थी. एकदम मादरजात नंगी थी. पहली बार उसका नग्न मादक असली देसी रूप मैंने देखा. सांवली छरहरी काया, छोटे सेब जैसी ठोस चूचियां, बस जरा सी लटकी हुई, स्लिम पर मजबूत जांघें और घनी झांटों से भरी बुर, मैं तो पागल सा हो गया. उसके शरीर पर कहीं चर्बी का जरा सा कतरा भी न था, बस एकदम कड़क दुबला पतला शरीर था.

वो मेरी ओर बिना झिझक देख रही थी पर मैं थोड़ा शरमा गया था. पहली बार किसी औरत के सामने मैं नंगा हुआ था और किसी औरत को पूरा नंगा देख रहा था. और वह आखिर उमर में मुझसे काफ़ी बड़ी थी, करीब करीब मेरी मौसी की उमर की. पर वह बड़ी सहजता से मटक मटक कर चलती हुई मेरे पास आकर बैठ गयी. मेरा लंड हाथ में पकड़कर बोली "वा बाबूजी, क्या खड़ा है! मेरी याद आ रही थी? ये मंजू बाई पसंद आयी लगता है आपके इस लौड़े को."

अब मुझसे नहीं रहा गया. उसे बांहों में भींच कर मैं उसको चूमने लगा. उसके होंठ भी थोड़े खुरदरे थे पर थे एकदम मीठे, उनमें से पान की भीनी खुशबू आ रही थी. वह भी अपनी बाहें मेरे गले में डाल कर इतराती हुई मेरे चुंबनों का उत्तर देने लगी, अपनी जीभ उसने मेरे मुंह में डाल दी और मैं उसे चूसने में लग गया. बड़ा मादक चुंबन था, उस नौकरानी का मुंह इतना मीठा होगा, मैंने सोचा भी नहीं था. मेरा लंड अब ऐसा फ़नफ़ना रहा था कि मैं उसे पटककर उसपर चढ़ने की कोशिश करने लगा.

"अरे क्या भूखे भेड़िये जैसे कर रहे हो बाबूजी, जरा मजा लो, धीरे धीरे मस्ती करो. आप आराम से लेटो, मैं करूंगी जो करना है" कहकर उसने मुझे पलंग पर धकेल दिया. मुझे लिटाकर वह फ़िर मेरा लंड चूसने लगी. मुझे मजा आ रहा था पर उसे कस के चोदने की इच्छा मुझे शांत नहीं लेटने दे रही थी.

"मंजू बाई, चलो अब चुदवा लो, ऐसे न सताओ. देखो, फ़िर चूस कर नहीं झड़ाना, आज मैं तुझे खूब चोदूंगा" मैंने उसकी एक चूंची हाथ में ले कर कहा. उसका कड़ा निपल कंचे जैसा मेरी हथेली में चुभ रहा था.

उसने हंस कर मुंडी हिलायी कि समझ गयी पर मेरे लंड को उसने नहीं छोड़ा, और ज्यादा मुंह में लेकर चूसती ही रही. शायद फ़िर से मेरी मलाई के पीछे थी यह बिल्ली! मैं तैश में आ गया, उठ कर उसके मुंह से लंड जबरदस्ती बाहर खींचा और उसे बिस्तर पर पटक दिया.

वह कहती रह गयी "अरे रुको बाबूजी, ऐसे नहीं" पर मैंने उसकी टांगें अलग करके अपना लंड उसकी बुर के मुंह पर रखा और पेल दिया. बुर इतनी गीली थी कि लंड आराम से अंदर चला गया. मैं अब रुकने की स्थिति में नहीं था, एक झटके से मैंने लंड जड़ तक उसकी चूत में उतार दिया और फ़िर उसपर लेट कर उसे चोदने लगा.

मंजू हंसते हुए मुझे दूर करने की कोशिश करने लगी "बाबूजी रुको, ऐसे नहीं चोदो, जरा मजा करके चोदो, मैं कहां भागी जा रही हूं? अरे धीरे बाबूजी, ऐसे जानवर जैसे न धक्के मारो! जरा हौले हौले प्यार करो मेरी बुर को" मैंने उसके मुंह को अपने होंठों में दबा लिया और उसकी बकबक बंद कर दी. फ़िर उसे भींच कर कस के हचक हचक कर उसे चोदने लगा. उसकी चूत इतनी गीली थी कि मेरा लंड सपासप अंदर बाहर हो रहा था. कुछ देर और छूटने की कोशिश करने के बाद मंजू बाई ने हार मान ली और मुझसे चिपटकर अपने चूतड़ उछाल उछाल

कर चुदवाने लगी. अपने पैर उसने मेरी कमर के इर्द गिर्द कस रखे थे और अपनी बांहों में मुझे भींच लिया था.

इतना आनंद हो सकता है चुदाई में मैंने सोचा भी नहीं था. मंजू का मुंह चूसते हुए मैंने उसकी चूत की कुटाई चालू रखी. यह सुख कभी समाप्त न हो ऐसा मुझे लग रहा था. पर मैंने बहुत जल्दी की थी, मंजू बाई की उस मादक देसी काया और उसकी गरमागरम चिपचिपी चूत ने मुझे ऐसा बहकाया कि मैं दो मिनिट में झड़ गया. पड़ा पड़ा मैं इस सुख में डूबा मजा लेता रहा. मंजू बाई बेचारी अब भी गरम थी और नीचे से अपनी चूत को ऊपर नीचे करके चुदाने की कोशिश कर रही थी.

मुझे अब थोड़ी शरम आई कि बिना मंजू को झड़ाये मैं झड़ गया. "माफ़ करना मंजू बाई, तुमको झड़ाने के पहले ही मैं बहक गया."

मेरी हालत देखकर मंजूबाई मुझसे चिपटकर मुझे चूमते हुए बोली "कोई बात नहीं मेरे राजा बाबू. आप जैसा गरम नौजवान ऐसे नहीं बहकेगा तो कौन बहकेगा. और मेरे बदन को देखकर ही आप ऐसे मस्त हुए हो ना? मैं तो निहाल हो गयी कि मेरे बाबूजी को ये गांव की औरत इतनी अच्छी लगी. आप मुझसे कितने छोटे हो, पर फ़िर भी आप को मैं भा गयी, पिछले जनम में मैंने जरूर अच्छे करम किये होंगे. चलो, अब भूख मिट गयी ना? अब तो मेरा कहना मानो. आराम से पड़े रहो और मुझे अपना काम करने दो."

मंजू के कहने पर मैंने अपना झड़ा लंड वैसे ही मंजू की चूत में रहने दिया और उसपर पड़ा रहा. मुझे बांहों में भरके चूमते हुए वह मुझसे तरह तरह की उकसाने वाली बातें करने लगी "बाबूजी मजा आया? मेरी चूत कैसी लगी? मुलायम है ना? पर मखमल जैसी चिकनी है या रेशम जैसी? कुछ तो बोलो, शरमाओ नहीं!"

मैंने उसे चूम कर कहा कि दुनिया के किसी भी मखमल या रेशम से ज्यादा मुलायम है उसकी बुर. मेरी तारीफ़ पर वह फ़ूल उठी. आगे पटर पटर करने लगी. "पर मेरी झांटें तो नहीं चुभीं आपके लंड को? बहुत बढ़ गयी हैं और घुंघराली भी हैं, पर मैं क्या करूं, काटने का मन नहीं होता मेरा. वैसे आप कहो तो काट दूं. मुझे बड़ी झांटें अच्छी लगती हैं. और मेरा चुम्मा कैसा लगता है, बताओ ना? मीठा है कि नहीं? मेरी जीभ कैसी है बताओ.

मैंने कहा कि जलेबी जैसी. मैं समझ गया थ कि वह तारीफ़ की भूखी है. वह मस्ती से बहक सी गयी. "कितना मीठा बोलते हो, जलेबी जैसी है ना? लो चूसो मेरी जलेबी" और मेरे गाल हाथों में लेकर मेरे मुंह में अपनी जीभ डाल दी. मैंने उस दांतों के बीच पकड़ लिया और चूसने लगा. वह हाथ पैर फ़ेंकने लगी. किसी तरह छूट कर बोली "अब देखो मैं तुमको कैसे चोदती हूं. अब मेरे पल्ले पड़े हो, रोज इतना चोदूंगी तुमको कि मेरी चूत के गुलाम हो जाओगे"

इन कामुक बातों का परिणाम यह हुआ कि दस मिनिट में मेरा फ़िर खड़ा हो गया और मंजू की चूत में अंदर घुस गया. मैंने फ़िर उसे चोदना शुरू कर दिया पर अब धीरे धीरे और प्यार से मजे ले लेकर. मंजू भी मजे ले लेकर चुदवाती रही पर बीच में अचानक उसने पलटकर मुझे नीचे पटक दिया और मेरे ऊपर आ गयी. ऊपर से उसने मुझे चोदना चालू रखा.

"अब चुपचाप पड़े रहो बाबूजी. आजकी बाकी चुदाई मुझपर छोड़ दो." उसका यह हुक्म मान कर मैं चुपचाप लेट गया. वह उठकर मेरे पेट पर बैठ गयी. मेरा लंड अब भी उसकी चूत में अंदर तक घुसा हुआ था. वह आराम से घुटने मोड़ कर बैठ गयी और ऊपर नीचे होकर मुझे चोदने लगी. ऊपर नीचे होते समय उसके मम्मे उछल रहे थे. मैंने हाथ बढ़ाकर उन्हें पकड़ लिया और दबाने लगा. उसकी गीली चूत बड़ी आसानी से मेरे लंड पर फ़िसल रही थी. उस मखमली म्यान ने मेरे लंड को ऐसा कड़ा कर दिया जैसे लोहे का डंडा हो.

मंजू मन लगाकर मजा ले लेकर मुझे हौले हौले चोद रही थी. चूत से पानी की धार बह रही थी जिससे मेरा पेट गीला हो गया था. मैंने अपना पूरा जोर लगाकर अपने आप को झड़ने से रोका और कमर ऊपर नीचे करके नीचे

से ही मंजू की बुर में लंड पेलता रहा.

आखिर मंजू बाई एक हल्की सिसकी के साथ झड़ ही गयी. उसकी आंखों में झलक आयी तृप्ति को देखकर मुझे रोमाच हो आया. आखिर मेरे लंड ने पहली बार किसी औरत को इतना सुख दिया था. झड़ कर भी वह रुकी नहीं, मुझे चोदती रही "पड़े रहो बाबूजी, अभी थोड़े छोड़ूंगी तुमको, घंटा भर चोदूंगी, बहुत दिन बाद लंड मिला है और वो भी ऐसा शाही लौड़ा. और देखो मैं कहूं तब तक झड़ना नहीं, नहीं तो मैं आपकी नौकरी छोड़ दूंगी"

इस मीठी धमकी के बाद मेरी क्या मजाल थी झड़ने की. घंटे भर तो नहीं, पर बीस एक मिनिट मंजू बाई ने मुझे खूब चोदा, अपनी सारी हवस पूरी कर ली. चोदने में वह बड़ी उस्ताद निकली, मुझे बराबर मीठी छुरी से हलाल करती रही, अगर मैं झड़ने के करीब आता तो रुक जाती. मुझे और मस्त करने को वह बीच बीच में खुद ही अपनी चूंचियां मसलने लगती. कहती "चूसोगे बाबूजी?" और खुद ही झुक कर अपनी चूंची खींच कर निपल चूसने लगती. मैं उठकर उसकी चूंची मुंह में लेने की कोशिश करता तो हंस कर मुझे वापस पलंग पर धकेल देती. तरसा रही थी मुझे!

दो बार झड़ने के बाद वह मुझ पर तरस खाकर रुकी. अब मैं वासना से तड़प रहा था. मुझसे सांस भी नहीं ली जा रही थी.

"चलो पीछे खिसककर सिरहाने से टिक कर बैठ जाओ बाबूजी, तुम बड़े अच्छे सैंया हो, मेरी बात मानते हो, अब इनाम दूंगी" मैं सरका और टिक कर बैठ गया. अब वह मेरी ओर मुंह करके मेरी गोद में बैठी थी. मेरा उछलता लंड अब भी उसकी चूत में कैद था. वह ऊपर होने के कारण उसकी छाती मेरे मुंह के सामने थी. पास से उसके सेब से मम्मे देखकर मजा आ गया. किसमिस के दानों जैसे छोटे निपल थे उसके और तन कर खड़े थे. मंजू मेरे लाड़ करते हुए बोले "मुंह खोलो बाबूजी, अपनी मंजू अम्मा का दूध पियो. दूध है तो नहीं मेरी चूंची में, झूट मूट का ही पियो, मुझे मजा आता है"

मेरे मुंह में एक घुंडी देकर उसने मेरे सिर को अपनी छाती पर भींच लिया और मुझे जोर जोर से चोदने लगी. उसका आधा मम्मा मेरे मुंह में समा गया था. उसे चूसते हुए मैंने भी नीचे से उचक उचक कर चोदना शुरू कर दिया, बहुत देर का मैं इस छुरी की धार पर था, जल्द ही झड़ गया.

पड़ा पड़ा मैं इस मस्त स्खलन का लुत्फ़ लेने लगा. मंजू उठी और मुझे प्यार भरा एक चुम्मा देकर जाने लगी. उसकी आंखों में असीम प्यार और तृप्ति की भावना थी. मैं उसका हाथ पकड़कर बोला. "अब कहां जाती हो मंजू बाई, यहीं सो जाओ मेरे पास, अभी तो रात बाकी है"

वह हाथ छुड़ाकर बोली "नहीं बाबूजी, मैं कोई आपकी लुगाई थोड़े ही हूं, कोई देख लेगा तो आफ़त हो जायेगी. कुछ दिन देखूंगी. अगर किसी को पता नहीं चला तो आप के साथ रात भर सोया करूंगी"

मुझे पक्का यकीन था कि इस कॉलोनी में जहां दिन में भी कोई नहीं होता था, रात को कोई देखने वाला कहां होगा!. और उसका घर भी तो भी मेरे बंगले से लगा हुआ था. पर वह थोड़ी घबरा रही थी इसलिये अभी मैंने उसे जाने दिया.

दूसरे दिन से मेरा कामजीवन ऐसे निखर गया जैसे खुद भगवान कामदेव की मुझ पर कृपा हो. मंजू सुबह सुबह चाय बनाकर मेरे बेडरूम में लाती और मुझे जगाती. जब तक मैं चाय पीता, वह मेरा लंड चूस लेती. मेरा लंड सुबह तन कर खड़ा रहता था और झड़ कर मुझे बहुत अच्छा लगता था. फ़िर नहा धोकर नाश्ता करके मैं ऑफ़िस को चला जाता.

दोपहर को जब मैं घर आता तो मंजू एकदम तैयार रहती थी. उसे बेडरूम में ले जाकर मैं फ़टाफ़ट दस मिनिट में

चोद डालता. वह भी ऐसी गरम रहती थी कि तुरंत झड़ जाती थी. इस जल्दबाजी की चुदाई का आनंद ही कुछ और था. अब मुझे पता चला कि 'क्विकी' किस चीज़ का नाम है. चुदने के बाद वह मुझे खुद अपने हाथों से प्यार से खाना खिलाती, एक बच्चे जैसे. मैं फ़िर ऑफ़िस को निकल जाता.

शाम को हम जरा सावधानी बरतते थे. मुझे क्लब जाना पड़ता था. कोई मिलने भी अक्सर घर आ जाता था. इसलिये शाम को मंजू बस किचन में ही रहती या बाहर चली जाती. पर रात को ऐसी धुआंधार चुदाई होती कि दिन की सारी कसर पूरी हो जाती. सोने को तो बारा बज जाते. अब वह मेरे साथ ही सोती थी. एक हफ़्ता हो गया था और रात को माहौल इतना सुनसान होता था कि किसी को कुछ पता चलने का सवाल ही नहीं था. वीक एंड में शुक्रवार और शनिवार रात तो मैं उसे रात भर चोदता, तीन चार बज जाते सोने को.

मैंने उसकी तनखा भी बढ़ा दी थी. अब मैं उसे हजार रुपये तनखा देता था. पहले वह नहीं मान रही थी. जरा नाराज होकर बोली "ये मैं पैसे को थोड़े करती हूं बाबूजी, तुम मुझे अच्छे लगते हो इसलिये करती हूं." पर मैंने जबरदस्ती की तो मान गयी. इसके बाद वह बहुत खुश रहती थी. मुझे लगता है कि उसकी वह खुशी पैसे के कारण नहीं बल्कि इसलिये थी कि उसे चोदने को मेरे जैसा नौजवान मिल गया था, करीब करीब उसके बेटे की उमर का.

मंजू को मैं कई आसनों में चोदता था पर उसकी पसंद का आसन था मुझे कुरसी में बिठाकर मेरे ऊपर बैठ कर अपनी चूंची मुझसे चुसवाते हुए मुझे चोदना. मुझे कुरसी में बिठाकर वह मेरा लंड अपनी चूत में लेकर मेरी ओर मुंह करके मेरी गोद में बैठ जाती. फ़िर मेरे गले में बाहें डाल कर मुझे अपनी छाती से चिपटाकर चोदती. उसकी चूंची मैं इस आसन में आराम से चूस सकता था और वह भी मुझे ऊपर से मन चाहे जितनी देर चोद सकती थी क्योंकि मेरा झड़ना उसके हाथ में था. उसके कड़े निपल मुंह में लेकर मैं मदहोश हो जाता.

शनिवार रविवार को बहुत मजा आता था. मेरी छुट्टी होने से मैं घर में ही रहता था इसलिये मौका देखकर कभी भी उससे चिपट जाता था और खूब चूमता और उसके मम्मे दबाता. जब वह किचन में खाना बनाती थी तो उसके पीछे खड़े होकर मैं उससे चिपट कर उसके मम्मे दबाता हुआ उसकी गर्दन और कंधे चूमता.

उसे इससे गुदगुदी होती थी और वह खूब हंसती और मुझे दूर करने की झूठी कोशिश करती "हटो बाबूझी, क्या लपर लपर कर रहे हो कुत्तों जैसे, मुझे अपना काम करने दो" तब मैं उसके मुंह को अपने मुंह से बंद कर देता. मेरा लंड उसके साड़ी के ऊपर से ही चूतड़ों के बीच की खाई में समा जाता और उसे उसकी गांड पर रगड़ रगड़ कर मैं खूब मजा लेता. कभी मौका मिलता तो दिन में ही बेडरूम में ले जाकर फ़टाफ़ट चोद डालता था.

धीरे धीरे मेरे दिमाग में उसके उन मस्त चूतड़ों को चोदने का खयाल आने लगा. उसके चूतड़ थे तो छोटे पर एकदम गोल और कड़े थे. चोदते समय मैं कई बार उन्हें पकड़कर दबाता था. इसपर वह कुछ नहीं कहती थी पर एकाध बार जब मैंने उसकी गांड में उंगली करने की कोशिश की तो बिचक गयी. उसे वह अच्छा नहीं लगता था.

कब उसकी गांड मारने को मिलती है इस विचार से मैं पागल सा हो जाता. वह चुदैल औरत भी शायद जानती थी कि मैं कैसे उसकी गांड को ललचाकर देखता था. इसलिये मेरे सामने जान बूझकर वह मटक मटक कर चूतड़ हिलाकर चलती थी. लगता था कि अभी पटककर उस छिनाल के चूतड़ों के बीच अपना लौड़ा गाड़ दूं.

एक दिन मैंने साहस करके उससे कह ही डाला "मंजू बाई, अपने इस सैंया को कभी पीछे के दरवाजे से भी अपने घर में आने दो, सामने से तुम्हारे घर में घुसने में बहुत मजा आता है पर पीछे के दरवाजे से आने में बात ही और कुछ है"

वह हंस कर टाल अयी "वा बाबूजी, बड़े शैतान हो, सीधे क्यों नहीं कहते कि मेरी गांड मारना चाहते हो. बोलो, यही बात है ना?" मैंने जब थोड़ा सकुचा कर हामी भरी तो तुनककर बोली "मैं क्यों अपनी गांड मरवाऊं, मेरा

क्या फ़ायदा उसमें? और दर्द होगा वो अलग!"

वो पैसे के फ़ायदे के बारे में नहीं कह रही थी क्योंकि जब मैंने एक बार हिचकते हिचकते उसकी तनखा बढ़ा देने की बात की तो बेहद नाराज हो गयी. दो दिन मुझे हाथ भी नहीं लगाने दिया. "मुझे रंडी समझा है क्या बाबूजी? कि पैसे देकर गांड मार लोगे?" गुस्से से बोली. उसे समझाने बुझाने में मुझे पूरे दो दिन लग गये. बिलकुल रूठी हुई प्रेमिका जैसे उस मनाना पड़ा तब उसका गुस्सा उतरा.

मुझे समझ में नहीं आता था कि कैसे उसे मनाऊं गांड मारने देने को. एक बार मैंने बहुत मिन्नत की तो बोली "तुम्हारा इतना मन है तो देखती हूं बाबूजी, कोई रास्ता निकलता है क्या. पर बड़े अपने आप को मेरा सैंया कहते हो! मुझे कितना प्यार करते हो ये तो दिखाओ. मेरी ये रसीली चूत कितनी अच्छी लगती है तुम्हें ये साबित करो. मुझे खुश करो मेरे राजा बाबू तो मैं शायद मारने दूंगी अपनी गांड तुमको. मेरे सैंया के लिये मैं कुछ भी कर लूंगी, पर मेरा सच्चा सैंया बन कर तो दिखाओ" पर यह नहीं बोलती थी कि मैं कैसे उसे खुश करूं. मैं चोदता तो था उसे मन भर के, उसकी इच्छा के अनुसार. पर वो और कुछ खुलासा नहीं करती थी कि उसके मन में क्या है.

एक रात मैं मंजू को गोद में बिठाकर उसे चूमते हुए एक हाथ से उसके मम्मे मसल रहा था और एक हाथ से उसकी घनी झांटों में उंगली डाल कर उसकी बुर सहला रहा था. ऐसा मैं अक्सर करता था, बड़ा मजा आता था, मंजू के मीठे मीठे चुम्मे, उसका कड़क बदन मेरी बांहों में और उंगली उसकी घुंघराले घने बालों से भरी बुर में.

उस दिन मैं उसकी चूत में उंगली डालकर उसे हस्तमैथुन करा रहा था. मैंने उसे सहज पूछा था कि जब मेरा लंड नहीं था तो कैसे अपनी चुदासी दूर करती थी तो हंस कर बोली "ये हाथ किस लिये है बाबूजी?" फ़िर मेरे आग्रह पर उसने मेरी गोद में बैठे बैठे ही अपनी उंगली से अपनी मुठ्ठ मार कर दिखायी.

सामने के आइने में मुझे साफ़ दिख रहा था, मंजू अंगूठे और एक उंगली से अपनी झांटें बाजू में करके बीच की उंगली बड़े प्यार से अपनी बुर की लकीर में चला कर अपना क्लिटोरिस रगड़ रही थी और बीच बीच में वह उस उंगली को अंदर घुसेड़कर अंदर बाहर करने लगती थी. उसका हस्तमैथुन देखकर मैं ऐसा गरम हुआ कि तभी उसे चोद डालना चाता था. पर उसने जिद पकड़ ली कि अब मैं उसकी मुठ्ठ मारूं. मैंने अपनी उंगली उसकी बुर में डाल दी. वह मुझे सिखाने लगी कि कैसे औरत की चूत को उंगली से चोदा जाता है.

जब वह झड़ गयी तो मैंने उंगली बाहर निकाली. उसपर सफ़ेद चिपचिपा रस लगा था. मैंने सहज ही उसे नाक के पास ले जाकर सूंघा. बहुत मादक सुगंध थी. मेरी यह हरकत देखकर वह इतरा कर बोली "सिर्फ़ सूंघोगे बाबूजी, चखोगे नहीं? बहुत मजा आयेगा, असली देसी घी निकलता है मेरी चूत से मेरे राजा. खोबा है खोबा!" उसकी चमकती आंखों में एक अजीब कामुकता थी.

अचानक मेरे दिमाग में बिजली सी कौंध गयी कि वह मुझसे क्या चाहती है. इतने दिनों की चुदाई में वह बेचारी रोज मेरा लंड चूसती थी, मेरा वीर्य पीती थी पर मैंने एक दिन भी उसकी चूत को मुंह नहीं लगाया था. वैसे उसकी रिसती लाल चूत देखकर कई बार मेरे मन में ये बात आयी थी पर मन नहीं मानता था. थोड़ी घिन लगती थी कि इस नौकरानी की चूत ठीक से साफ़ की हुई होगी कि नहीं. वैसे वह बेचारी दिन में दो बार नहाती थी पर फ़िर भी मैंने कभी उसकी चूत में मुंह नहीं डाला था. आज उसकी उस रिसती बुर को देखकर मैंने निश्चय कर लिया कि चूस कर देखूंगा, खूब चाटूंगा कि कैसा है यह सफ़ेद शहद.

मेरा लंड तन कर खड़ा था, उसके जोश में मैंने उसकी ओर देखकर अपना मुंह खोला और अपनी उंगली मुंह में लेकर चूसने लगा. मेरी सारी हिचक दूर हो गयी. बहुत मस्त खारा सा स्वाद था. मंजू मेरी गोद में बिलकुल चुप बैठी मेरी ओर देख रही थी. उसकी सांस अब तेज चल रही थी. एक अनकही वासना उसकी आंखों में उमड़ आयी थी. मैं उंगली जीभ से साफ़ करके बोला "मंजू बाई, तेरी बुर में तो लगता है खजाना है शहद का. चलो चटवाओ, टांगें खोलो और लेट जाओ. मैं भी तो चाट कर देखूं कि कितना रस निकलता है तेरी चूत में से"

यह सुनकर वह कुछ देर ऐसे बैठी रही जैसे मेरी बात पर उसे यकीन न हो रहा हो. फ़िर जब उसने समझ लिया कि मैं पूरे दिल से यह बात कह रहा हुं तो बिना कुछ कहे मेरी गोद से वह उठ कर बाहर चली गयी. मुझे समझ में नहीं आया कि इसे क्या हुआ. दो मिनिट बाद वापस आयी तो हाथ में नारियल के तेल की शीशी लेकर.

मैंने पूछा "अरे ये क्यों ले आयी हो मंजू रानी, चोदने में तो इसकी जरूरत नहीं पड़ती, तेरी चूत तो वैसे ही गीली रहती है हरदम" तो शीशी सिरहाने रखकर बोली "अगर आज आपने मुझे खुश कर दिया बाबूजी तो मेरी गांड आपकी नजर है. मार लेना जैसे चाहे. इसलिये तेल ले आई हूं, बिना तेल के आपका यह मुस्टंडा अंदर नहीं जायेगा, मेरी गांड बिलकुल कुवारी है बाबूजी, फ़ट जायेगी, जरा रहम करके मारना"

उसकी कोरी गांड मारने के खयाल से मेरा लंड उछलने लगा. मैंने उसे कुरसी में बिठाया और उसकी टांगें उठाकर कुरसी के हाथों में फ़ंसा दीं. अब उसकी टांगें पूरी फ़ैली हुई थीं और बुर एकदम खुली हुई थी. मैंने उसके सामने नीचे जमीन पर बैठ कर उसकी जांघों को चूमा. मंजू अब मस्ती में पागल से हो गयी थी. उसने खुद ही अपनी उंगली से अपनी झाटें बाजू में कीं और दूसरे हाथ की उंगली से चूत के पपोटे खोल कर लाल लाल गीला छेद मुझे दिकाया. "चूस लो मेरे बाबूजी जन्नत के इस दरवाजे को, चाट लो मेरा माल मेरे राजा, मां कसम, बहुत मसालेदार रज है मेरी, आप चाटोगे तो फ़िर और कुछ नहीं भायेगा. मैं तो कब से सपना देख रही हूं अपने सैंया को अपना ये अमरित चखाने का, पर आपने मौका ही नहीं दिया"

मैं जीभ निकालकर उसकी चूत पर धीरे धीरे फ़िराने लगा. उस चिपचिपे पानी का स्वाद कुछ ऐसा मादक था कि मैं कुत्ते जैसी पूरी जीभ निकालकर उसकी बुर को ऊपर से नीचे तक चाटने लगा. उसके घुंघराले बाल मेरी जीभ में लग रहे थे. चूत के ऊपर के कोने में जरा सा लाल लाल कड़ा हीरे जैसा उसका क्लिट था. उसपर से मेरी जीभ जाती तो वह किलकने लगती.

उसका रस ठीक से पीने के लिये मैंने अपने मुंह में उसकी चूत भर ली और आम जैसा चूसने लगा. चम्मच चम्मच रस मेरे मुंह में आने लगा. "हाय बाबूजी, कितना मस्त चूसते हो मेरी चूत, आज मैं सब पा गयी मेरे राजा, कब से मैंने मन्नत मांगी थी कि आप को मेरे बुर का माल पिलाऊं, मैं जानती थी कि आप पसंद करोगे" कराहते हुए वह बोली. अब वह अपनी कमर हिला हिला कर आगे पीछे होते हुई मेरे मुंह से अपने आप को चुदवाने की कोशिश कर रही थी. अचानक वह झड़ी और अगले दो तीन मिनिट मैं घूंट घूंट वह शहद पीता रहा.

"बाई, सच में तेरी चूत का पानी बड़ा जायकेदार है, एकदम शहद है, फ़ालतू मैंने इतने दिन गंवाये" मैंने जीभ से चटखारे लेते हुए कहा. "तो क्या हुआ बाबूजी, अब से रोज पिया करो, अब तो मैं सुबह शाम, दिन रात आपको पेट भर कर अपना शहद चटवाऊंगी." मंजू मेरे सिर को अपनी चूत पर दबाकर बोली.

मैं चूत चाटता ही रहा. उसे तीन बार और झड़ाया. वह भी मस्ती में मेरे सिर को कस कर अपनी बुर पर दबाये मेरे मुंह पर धक्के लगाती रही. झड़ झड़ कर वो थक गयी पर मैं नहीं रुका. वो पूरी लस्त होकर कुरसी में पीछे लुढ़क गयी थी. अब जब भी मेरी जीभ उसके क्लिट पर जाती, तो उसका बदन कांप उठता. उसे सहन नहीं हो रहा था.

"छोड़ो अब बाबूजी, मार डालोगे क्या? मेरी बुर दुखने लगी, तुमने तो उसे निचोड़ डाला, अब किरपा करो मुझपर, छोड़ दो मुझे, पांव पड़ती हूं तुम्हारे" वो मेरे सिर को हटाने की कोशिश करते हुए बोली.

मैंने उसके हाथ पकड़कर अपने सिर से अलग किये और उसकी चूत को और जोर से चाटने और चूसने लगा. उसके क्लिट को मैं अब जीभ से रेती की तरह घिस रहा था. उसके तड़पने में मुझे मजा आ रहा था. वो अब सिसक सिसक कर इधर उधर हाथ पैर फ़ेंक कर तड़प रही थी. जब आखिर वो रोने लगी तब मैंने उसे छोड़ा. उठकर उसे खींचकर उठाता हुआ बोला "चलो बाई, तेरा शहद लगता है खतम हो गया. अब गांड मराने को तैयार हो जाओ. कैसे मराओगी, खड़े खड़े या सोकर?"

वह बेचारी झड़ झड़ कर इतनी थक गयी थी कि उससे खड़ा भी नहीं हुआ जा रहा था. उसकी हालत देख कर मैंने उसे बांहों में उठाया और उसके लस्त शरीर को पट पलंग पर पटक कर उसपर चढ़ बैठा.

मैंने जल्दी जल्दी अपना लंड तेल से चिकना किया और फ़िर उसकी गांड में तेल लगाने लगा. एकदम सकरा और छोटा छेद था, वो सच बोल रही थी कि अब तक गांड में कभी किसी ने लंड नहीं डाला था. मैंने पहले एक और फ़िर दो उंगली डाल दीं. वो दर्द से सिसक कर उठी. "धीरे बाबूजी, दुखता है ना, दया करो थोड़ी आपकी इस नौकरानी पर, हौले हौले उंगली करो"

मैं तैश में था. सीधा उसकी गांड का छेद दो उंगलियों से खोलकर बोतल लगायी और चार पांच चम्मच तेल अंदर भर दिया. फ़िर दो उंगली अंदर बाहर करने लगा "चुप रहो बाई, चूत चुसवा कर मजा किया ना, अब जब मैं लंड से गांड फ़ाड़ूंगा तो देखना कितना मजा आता है. तेरी चूत के रस ने मेरे लंड को मस्त किया है, अब उसकी मस्ती तेरी गांड से ही उतरेगी".

मंजू सिसकते हुए बोली पर उसकी आवाज में प्यार और समर्पण उमड़ा पड़ रहा था "बाबूजी, गांड मार लो, मैंने तो खुद आपको ये चढ़ावे में दे दी है, आपने मुझे इतना सुख दिया मेरी चूत चूस कर, ये अब आपकी है, जैसे चाहो मजा कर लो, बस जरा धीरे मारो मेरे राजा"

अब तक मैं भी पूरा फ़नफ़ना गया था. उठ कर मैं मंजू की कमर के दोनों ओर घुटने टेक कर बैठा और गुदा पर सुपाड़ा जमा कर अंदर पेल दिया. उसके सकरे छेद में जाने में तकलीफ़ हो रही थी इसलिये मैंने हाथों से पकड़कर उसके चूतड़ फ़ैलाये और फ़िर कस कर सुपाड़ा अंदर डाल दिया. पक्क से वह अंदर गया और मंजू दबी आवाज में "उई ऽ मां, मर गयी रे" चीख कर थरथराने लगी. पर बेचारी ऐसा नहीं बोली कि बाबूजी गांड नहीं मराऊंगी. मुझे रोकने की भी उसने कोई कोशिश नहीं की.

मैं रुक गया. ऐसा लग रहा था जैसे सुपाड़े को किसी ने कस के मुठ्ठी में पकड़ा हो. थोड़ी देर बाद मैंने फ़िर पेलना शुरू किया. इंच इंच करके लंड बाई की गांड में धंसता गया. जब बहुत दुखता तो बेचारी सिसक कर हल्के से चीख देती और मैं रुक जाता.

आखिर जब जड़ तक लंड अंदर गया तो मैंने उसके कूल्हे पकड़ लिये और लंड धीरे धीरे अंदर बाहर करने लगा. उसकी गांड का छल्ला मेरे लंड की जड़ को कस कर पकड़ था, जैसे किसीने अंगूठी पहना दी हो. उसके कूल्हे पकड़कर मैंने उसकी गांड मारना शुरू कर दी. पहले धीरे धीरे मारी. गांड में इतना तेल था कि लंड मस्त फ़च फ़च करता हुआ सटक रहा था. वह अब लगातार कराह रही थी. जब उसका सिसकना थोड़ा कम हुआ तो मैंने उसके बदन को बाहों में भींच लिया और उसपर लेट कर उसके मम्मे पकड़कर दबाते हुए कस के उसकी गांड मारने लगा.

मैंने उस रात बिना किसी रहम के मंजू की गांड मारी, ऐसे मारी जैसे रंडी को पैसे देकर रात भर को खरीदा हो और फ़िर उसे कूट कर पैसा वसूल कर रहा होऊं. मैं इतना उत्तेजित था कि अगर वह रोकने की कोशिश करती तो उसका मुंह बंद करके जबरदस्ती उसकी मारता. उसकी चूचियां भी मै बेरहमी से मसल रहा था, जैसे आम का रस निकालने को पिलपिला करते हैं. पर वह बेचारी सब सह रही थी. आखिर में तो मैंने ऐसे धक्के लगाये कि वह दर्द से बिलबिलाने लगी. मैं झड़ कर उसके बदन पर लस्त सो गया. क्या मजा आया था. ऐसा लगता था कि अभी अभी किसी पर बलात्कार किया हो.

जब लंड उसकी गांड से निकाल कर उसे पलटा तो बेचारी की आंखों में दर्द से आंसू आ गये थे, बहुत दुखा था उसे पर वह बोली कुछ नहीं क्योंकि उसीने खुद मुझे उसकी गांड मारने की इजाजत दी थी. उसका चुम्मा लेकर मैं बाजू में हुआ तो वह उठकर बाथरूम चली गयी. उससे चला भी नहीं जा रहा था, पैर फ़ैलाकर लंगड़ाकर चल

रही थी. जब वापस आयी तो मैंने उसे बांहों में ले लिया. मुझसे लिपटते हुए बोली "बाबूजी, मजा आया? मेरी गांड कैसी थी?"

मैंने उस चूम कर कहा "मंजू बाई, तेरी कोरी कोरी गांड तो लाजवाब है, आज तक कैसे बच गयी? वो भी तेरे जैसी चुदैल औरत की गांड ! लगता है मेरे ही नसीब में थी"

वो मजाक करते हुए बोली "मैंने बचा के रखी बाबू आप के लिये. मुझे मालूम था आप आओगे. अब आप कभी भी मारो, मैं मना नहीं करूंगी. मेरी चूत में मुंह लगाकर आपने तो मुझे अपना गुलाम बना लिया. बस ऐसे ही मेरी चूत चूसा करो मेरे राजा बाबू, फ़िर चाहे जितनी बार मारो मेरी गांड . पर बहुत दुखता है बाबू, आपका लंड है कि मूसल और आप ने आज गांड की धज्जियां उड़ा दीं, बहुत बेदर्दी से मारी मेरी गांड! पर तुमको सौ खून माफ़ हैं मेरे राजा, आखिर मेरे सैंया हो और मेरे सैंया को मेरे ये चूतड़ इतने भा गये इसकी भी बड़ी खुशी है मुझे"

उसकी इस अदा पर मैंने उस रात फ़िर उसकी बुर चूसी और फ़िर उसे मन भर के चोदा.

इसके बाद मैं उसकी गांड हफ़्ते में दो बार मारने लगा, उससे ज्यादा नहीं, बेचारी को बहुत दुखता था. मैं भी मार मार कर उसकी कोरी टाइट गांड ढीली नहीं करना चाहता था. उसका दर्द कम करने को गांड में लंड घुसेड़ने के बाद मैं उसे गोद में बिठा लेता और उसकी बुर को उंगली से चोदकर उसे मजा देता, दो तीन बार उसे झड़ाकर फ़िर उसकी मारता. गांड मारने के बाद खूब उसकी बुर चूसता, उसे मजा देने को और उसका दर्द कम करने को.

वैसे उसकी चूत के पानी का चस्का मुझे ऐसा लगा, कि जब मौका मिले, मैं उसकी चूत चूसने लगा. एक दो बार तो जब वह खाना बना रही थी, या टेबल पर बैठ कर सब्जी काट रही थी, मैंने उसकी साड़ी उठाकर उसकी बुर चूस ली. उसको हर तरह से चोदने और चूसने की मुझे अब ऐसी आदत लग गयी थी कि मैं सोचता था कि मंजू नहीं होती तो मैं क्या करता.

****

यही सब सोचते मैं पड़ा था. मंजू ने अपने मम्मों पर हुए जखमों पर तेल लगाते हुए मुझे फ़िर उलाहना दिया "क्यों चबाते हो मेरी चूंची बाबूजी ऐसे बेरहमी से. पिछले दो तीन दिन से ज्यादा ही काटने लगे हो मुझे"

मैंने उसकी बुर को सहलाते हुए कहा "बाई, अब तुम मुझे इतनी अच्छी लगती हो कि तेरे बदन का सारा रस मैं पीना चाहता हूं. तेरी चूत का अमरित तो बस तीन चार चम्मच निकलता है, मेरा पेट नहीं भरता. तेरी चूंचियां इतनी सुंदर हैं, लगता है इनमें दूध होता तो पेट भर पी लेता. अब दूध नहीं निकलता तो जोश में काटने का मन होता है"

वह हंसते हुए बोली "अब इस उमर में कहां मुझे दूध छूटेगा बाबूजी. दूध छूटता है नौजवान छोकरियों को जो अभी अभी मां बनी हैं."

फ़िर वह चुप हो गयी और कपड़े पहनने लगी. कुछ सोच रही थी. अचानक मुझसे पूछ बैठी "बाबूजी, आप को सच में औरत का दूध पीना है या ऐसे ही मुफ़्त बतिया रहे हो"

मैंने उसे भरोसा दिलाया कि अगर उसके जैसे रसीली मतवाली औरत हो तो जरूर उसका दूध पीने में मुझे मजा आयेगा.

"कोई इंतजाम करती हूं बाबूजी. पर मुझे खुश रखा करो. और मेरी चूचियों को दांत से काटना बंद कर दो" उसने हुकुम दिया.

उसे खुश रखने को अब मैंने रोज उसकी बुर पूजा शुरू कर दी. जब मौका मिलता, उसकी चूत चाटने में लग जाता. मैंने एक वी सी आर भी खरीद लिया और उसे कुछ ब्लू फ़िल्म दिखाईं. कैसेट लगाकर मैं उसे सोफ़े में बिठा देता और खुद उसकी साड़ी ऊपर कर के उसकी बुर चूसने में लग जाता. एक घंटे की कैसेट खतम होते होते वह मस्ती से पागल होने को आ जाती. मेरा सिर पकड़कर अपनी चूत पर दबा कर मेरे सिर को जांघों में पकड़कर वह फ़िल्म देखते हुए ऐसी झड़ती कि एकाध घंटे किसी काम की नहीं रहती.

रात को कभी कभी मैं उसे अपने मुंह पर बिठा लेता. उछल उछल कर वो ऐसे मेरे मुंह और जीभ को चोदती कि जैसे घोड़े की सवारी कर रही हो. कभी मैं उससे सिक्स्टी नाइन कर लेता और उसकी बुर चूस कर अपने लंड की मलाई उसे खिलाता. मंजू बाई मुझ पर बेहद खुश थी और मैं राह देख रहा था कि कब वह मुझ पर मेहरबान होती है.

एक शनिवार को वह सुबह ही गायब हो गयी. दोपहर की नींद के बाद मैं जब उठा तो मंजू वापस आ गयी थी. चाय लेकर खड़ी थी. मैंने उसकी कमर में हाथ डाल कर पास खींचा और जोर से चूम लिया. "क्यों मंजू बाई, आज सुबह से चम्मच भर शहद भी नहीं मिला. कहां गायब हो गयी थी?"

वह मुझसे छूट कर मुझे आंख मारते हुए धीरे से बोली. "आप ही के काम से गयी थी बाबूजी. जरा देखो, क्या माल लाई हूं तुम्हारे लिये!"

मैंने देखा तो दरवाजे में एक जवान लड़की खड़ी थी. थोड़ी शरमा जरूर रही थी पर टक लगाकर मेरी और मंजू के बीच की चूमा चाटी देख रही थी. मैंने मंजू को छोड़ा और उससे पूछा कि ये कौन है. वैसे मंजू और उस लड़की की सूरत इतनी मिलती थी कि मैं समझ गया कि ये कन्या कौन है. मंजू ने भी पुष्टि की "बाबूजी, ये गीता है, मेरी बेटी. बीस साल की है, दो साल पहले शादी की है इसकी. अब एक बच्चा भी है"

मैं गीता को बड़े इंटरेस्ट से घूर रहा था. मंजू बाई उसे क्यों लाई थी यह भी मुझे थोड़ा थोड़ा समझ में आ रहा था. गीता मंजू जैसी ही सांवली थी पर उससे ज्यादा खूबसूरत थी. शायद उसकी जवानी की वजह से ऐसी लग रही थी. मंजू से थोड़ी नाटी थी और उसका बदन भी मंजू से ज्यादा भरा पूरा था. एकदम मांसल और गोल मटोल, शायद मां बनने की वजह से होगा.

उस लड़की का कोई अंग एकदम मन में भरता था तो वह था उसकी विशाल छाती. उसका आंचल ढला हुआ था; शायद उसने जान बूझकर भी गिराया हो. उसकी चोली इतनी तंग थी कि छातियां उसमें से बाहर आने को कर रही थीं. चोली के पतले कपड़े में से उसके नारियल जैसे मम्मे और उनके सिरे पर जामुन जैसे निपलों का आकार दिख रहा था. निपलों पर उसकी चोली थोड़ी गीली भी थी.

मेरा लंड खड़ा होने लगा. मुझे थोड़ा अटपटा लगा पर मैं क्या करता, उस छोकरी की मस्त जवानी थी ही ऐसी. मंजू आगे बोली. "उसे मैंने सब बता दिया है बाबूजी, इसलिये आराम से रहो, कुछ छुपाने की जरूरत नहीं है"

मेरा अब तक तन्ना कर पूरा खड़ा हो गया था. मंजू हंसने लगी "मेरी बिटिया भा गयी बाबूजी आप को. कहो तो इसे भी यहीं रख लूं. आप की सेवा करेगी. हां इसकी तनखा अलग होगी"

उस मतवाली छोकरी के लिये मैं कुछ भी करने को तैयार था. "बिलकुल रख लो बाई, और तनखा की चिंता मत करो"

"असल बात तो आप समझे ही नहीं बाबूजी, गीता पिछले साल ही मां बनी है. बहुत दूध आता है उसको, बड़ी तकलीफ़ भी होती है बेचारी को. बच्चा एक साल को हो गया, अब दूध नहीं पीता, पर इसका दूध बंद नहीं होता. चूंची सूज कर दुखने लगती है. जब आप मेरा दूध पीने की बात बोले तो मुझे खयाल आया, क्यों न गीता को

गांव से बुला लाऊं, उसकी भी तकलीफ़ दूर हो जायेगा और आपके मन की बात भी हो जायेगी? बोलो, जमता है बाबूजी?"

मैंने गीता की चूंची घूरते हुए कहा "पर इसका मर्द और बच्चा?"

"उसकी फ़िकर आप मत करो, इसका आदमी काम से छह महने को शहर गया है, इसलिये मैंने इसे मायके बुला लिया. इसकी सास अपने पोते के बिना नहीं रह सकती, बहुत लगाव है, इसलिये उसे वहीं छोड़ दिया है, ये अकेली है इधर"

याने मेरी लाइन एकदम क्लीयर थी. मैं गीता का जोबन देखने लगा. लगता था कि पकड़ कर खा जाऊं, चढ़ कर मसल डालूं उसके मतवाले रूप को. गीता भी मस्त हो गयी थी, मेरे खड़े लंड को देखते हुए धीरे धीरे खड़े खड़े अपनी जांघें रगड़ रही थी.

"सिर्फ़ दूध पीने की बात हुई है बाबूजी, ये समझ लो." मंजू ने मुझे उलाहना दिया. फ़िर गीता को मीठी फ़टकार लगायी "और सुन री छिनाल लड़की. मेरी इजाजत के बिना इस लंड को हाथ भी नहीं लगाना, ये सिर्फ़ तेरी अम्मा का है"

"अम्मा ऽ, ये क्या? मेरे को भी मजा करने दे ना ऽ कितना मतवाला लौड़ा है, तू बता रही थी तो भरोसा नहीं था मेरा पर ये तो और खूबसूरत निकला" गीता मचल कर बोली. उसकी नजरें मेरे लंड पर गड़ी हुई थीं. बड़ी चालू चीज़ थी, जरा भी नहीं शरमा रही थी, बल्कि चुदाने को मरी जा रही थी.

"बदमाश कहीं की, तू सुधरेगी नहीं, मैंने कहा ना फ़िर देखेंगे. अभी चोली निकाल और फ़टाफ़ट बाबूजी को दूध पिला." मंजू ने अपनी बेटी को डांटते हुए कहा.

मंजू अब मेरे लंड को पजामे के बाहर निकाल कर प्यार से मुठिया रही थी. फ़िर उसने झुक कर उसे चूमना शुरू कर दिया. उधर गीता ने अपना ब्लाउज़ निकाल दिया. उसकी पपीते जैसे मोटी मोटी चूचियां अब नंगी थीं. वे एकदम फ़ूली फ़ूली थीं जैसे अंदर कुछ भरा हो. वजन से वे लटक रही थें.

एक स्तन को हाथ में उठाकर सहारा देते हुए गीता बोली "अम्मा देख ना, कैसे भर गये हैं मम्मे मेरे, आज सुबह से खाली नहीं हुए, बहुत दुखते हैं"

"अरे तो टाइम क्यों बरबाद कर रही है. आ बैठ बाबूजी के पास और जल्दी पिला उनको. भूखे होंगे बेचारे" मंजू ने उसका हाथ पकड़कर खींचा और पलंग पर मेरे पास बिठा दिया.

मैं सिरहाने से टिक कर बैठा था. गीता मेरे पास सरकी, उसकी काली आंखों में मस्ती झलक रही थी. उसके मम्मे मेरे सामने थे. निपलों के चारों ओर तश्तरी जैसे बड़े गोले थे. पास से वे मोटे मोटे लटके स्तन और रसीले लग रहे थे. अब मुझसे नहीं रहा गया और झुक कर मैंने एक काला जामुन मुंह में ले लिया और चूसने लगा.

मीठा कुनकुना दूध मेरे मुंह में भर गया. मेरी उस अवस्था में मुझे वह अमृत जैसा लग रहा था. मैंने दोनों हाथों में उसकी चूंची पकड़ी और चूसने लगा जैसे कि बड़े नारियल का पानी पी रहा होऊं. लगता था मैं फ़िर छोटा हो गया हूं. आंखें बंद करके मैं स्तनपान करने लगा.

उधर मंजू ने मेरा लंड मुंह में ले लिया. अपनी कमर उछाल कर मैं उसका मुंह चोदने की कोशिश करने लगा. वह महा उस्ताद थी, बिना मुझे झड़ाये प्यार से मेरा लंड चूसती रही. अब तक गीता भी गरमा गयी थी. मेरा सिर उसने कस कर अपनी छाती पर भींच लिया जिससे मैं छूट न पाऊं और उसका निपल मुंह से न निकालूं. उसे क्या मालूम

था कि उसकी उस मतवाली चूंची को छोड़ दूं ऐसा मूरख मैं नहीं था. उसका मम्मा दबा दबा कर उसे दुहते हुए मैं दूध पीने लगा.

अब वह प्यार से मेरे बाल चूम रही थी. सुख की सिसकारियां भरती हुई बोली "अम्मा, बाबूजी की क्या जवानी है, देख क्या मस्त चूस रहे हैं मेरी चूंची, एकदम भूखे बच्चे जैसे पी रहे हैं. और उनका यह लंड तो देख अम्मा, कितनी जोर से खड़ा है. अम्मा, मुझे भी चूसने दे ना!"

मंजू ने मेरा लंड मुंह से निकाल कर कहा "कल से, आज नहीं, वो भी अगर बाबूजी हां कहें तो! पता नहीं तेरा दूध उन्हें पसंद आया है कि नहीं" वैसे गीता के दूध के बारे में मैं क्या सोचता हूं, इसका पता उसे मेरे उछलते लंड से ही लग गया होगा.

आखिर गीता का स्तन खाली हो गया. उसे दबा दबा कर मैंने पूरा दूध निचोड़ लिया. फ़िर भी उसके उस मोटे जामुन से निपल को मुंह से निकालने का मन नहीं हो रहा था. पर मैंने देखा कि उसके दूसरे निपल से अब दूध टपकने लगा था. शायद ज्यादा भर गया था. मैंने उसे मुंह में लिया और उसकी दूसरी चूंची दुह कर पीने लगा. गीता खुशी से चहक उठी. "अम्मा, ये तो दूसरा मम्मा भी खाली कर रहे हैं. मुझे लगा था कि एक से इनका मन भर जायेगा."

"तो पीने दे ना पगली, उन्हें भूख लगी होगी. अच्छा भी लगा होगा तेरा दूध. अब बकबक मत कर, मुझे बाबूजी का लौड़ा चूसने दे ठीक से, बस मलाई फ़ेकने ही वाला है अब" कहकर मंजू फ़िर शुरू हो गयी

जब दूसरी चूंची भी मैंने खाली कर दी तब मंजू ने मेरा लंड जड़ तक निगल कर अपने गले में ले लिया और ऐसे चूसा कि मैं झड़ गया. मुझे दूध पिलवा कर उस बिल्ली ने मेरी मलाई निकाल ली थी. मैं लस्त होकर पीछे लुढ़क गया पर गीता अब भी मेरा सिर अपनी छाती पर भींच कर अपनी चूंची मेरे मुंह में ठूंसती हुई वैसे ही बैठी थी.

मैंने किसी तरह उसे अलग किया. गीता मेरी ओर देख कर बोली "बाबूजी, पसंद आया दूध?" वह जरा टेंशन में थी कि मैं क्या कहता हूं.

मैंने खींच कर उसका गाल चूम लिया. "बिलकुल अमरित था गीता रानी, रोज पिलाओगी ना?"

वह थोड़ी शरमा गयी पर मुझे आंख मार कर हंसने लगी. मैंने मंजू से पूछा "कितना दूध निकलता है इसके थनों से रोज बाई? आज तो मेरा ही पेट भर गया, इसका बच्चा कैसे पीता था इतना दूध"

मंजू बोली "अभी ज्यादा था बाबूजी, कल से बेचारी की चूंची खाली नहीं की थी ना. नहीं तो करीब इसका आधा निकलता है एक बार में. वैसे हर चार घंटे में पिला सकती है ये." मैंने हिसाब लगाया. मैंने कम से कम पाव डेढ़ पाव दूध जरूर पिया था. अगर दिन में चार बार यह आधा पाव दूध भी दे तो आधा पौना लिटर दूध होता था दिन का.

दिन में दो तीन पाव देने वाली उस मस्त दो पैर की गाय को देख कर मैं बहक गया. मंजू को पूछा "बोलो बाई, कितनी तनखा लेगी तेरी बेटी?"

वो गीता की ओर देख कर बोली "पांच सौ रुपये दे देना बाबूजी. आप हजार वैसे ही देते हो, आप से ज्यादा नहीं लूंगी."

मैंने कहा कि हजार रुपये दूंगा गीता को. गीता तुनक कर बोली "पर काहे को बाबूजी, पांच सौ बहुत है, और मैं भी तो आपके इस लाख रुपये के लंड से चुदवाऊंगी रोज . हजार ज्यादा है, मैं कोई कमाने थोड़े ही आई हूं

आपके पास."

मैंने गीता की चूंची प्यार से दबा कर कहा "मेरी रानी, ज्यादा नहीं दे रहा हूं, पांचसौ तुम्हारे काम के, और पांच सौ दूध के. अब कम से कम मेरे लिये तो बाहर से दूध खरीदने की जरूरत नहीं है. वैसे तुम्हारा ये दूध तो हजारों रुपये में भी सस्ता है" गीता शरमा गयी पर मंजू हंसने लगी "बिलकुल ठीक है बाबूजी. बीस रुपये लिटर दूध मिलता है, उस हिसाब से महने भर में बीस पचीस लिटर दुध तो मिल ही जायेगा आपको"

गीता ने एक दो बार और जिद की पर उस रात मंजू ने मुझे अपनी बेटी नहीं चोदने दी. बस उस रात को एक बार और गीता का दूध मुझे पिलाया. दूध पिलाते पिलाते गीता बार बार चुदाने की जिद कर रही थी पर मंजू अड़ी रही. "गीता बेटी, आज रात और सबर कर ले. कल शनिवार है, बाबूजी की छुट्टी है. कल सुबह दूध पिलाने आयेगी ना तू, उसके बाद कर लेना मजा"

गीता के जाने के बाद मैंने मंजू को ऐसा चोदा कि वह एकदम खुश हो गयी. "आज तो बाबूजी, बहुत मस्त चोद रहे हो हचक हचक कर. लगता है मेरी बेटी बहुत पसंद आयी है, उसी की याद आ रही है, है ना?"

सुबह जब मंजू चाय लेकर आयी तो साथ में गीता भी थी. दोनों सुबह सुबह नहा कर आयी थीं, बाल अब भी गीले थे. मंजू तो मादरजात नंगी थी जैसी उसकी आदत थी, गीता ने भी बस एक गीली साड़ी ओढ़ रखी थी जिसमें से उसका जोबन झलक रहा था.

"ये क्या, सुबह सुबह पूजा वूजा करने निकली हो क्या दोनों?" मैंने मजाक किया. गीता बोली "हां बाबूजी, आज आपके लंड की पूजा करूंगी, देखो फ़ूल भी लाई हूं" सच में वह एक डलिया में फ़ूल और पूजा का सामान लिये थी. बड़े प्यार से उसने मेरे लंड पर एक छोटा टीका लगाया और उसे एक मोगरे की छोटी माला पहना दी. ऊपर से मेरे लंड पर कुछ फ़ूल डाले और फ़िर उसे पकड़कर अपने हाथों में लेकर उसपर उन मुलायम फ़ूलों को रगड़ने लगी. दबाते दबाते झुक कर अचानक उसने मेरे लंड को चूम लिया.

मैं कुछ कहता इसके पहले मंजू हंसती हुई मेरे पास आकर बैठ गयी. मेरा जोर का चुंबन लेकर अपनी चूंची मेरी छाती पर रगड़ते हुए बोली. "अरे ये तो बावरी है, कल से आपके गोरे मतवाले लंड को देखकर पागल हो गयी है. बाबूजी, जल्दी से चाय पियो. मुझे भी आप से पूजा करवानी है अपनी चूत की. आप मेरी बुर की पूजा करो, गीता बेटी आपके लंड की पूजा करेगी अपने मुंह से."

मेरा कस कर खड़ा था. मैं चाय की चुस्की लेने गया तो देखा बिना दूध की चाय थी. मंजू को बोला कि दूध नहीं है तो वह बदमाश औरत दिखावे के लिये झूट मूट अपना माथा ठोक कर बोली " हाय, मैं भूल ही गयी, मैंने दूध वाले भैया को कल ही बता दिया कि अब दूध की जरूरत नहीं है हमारे बाबूजी को. अब क्या करें, चाय के बारे में तो मैंने सोचा ही नहीं. वैसे फ़िकर की बात नहीं है बाबूजी, अब तो घर का दूध है, ये दो पैरों वाली दो थनों की खूबसूरत गैया है ना यहां! ए गीता, इधर आ जल्दी"

गीता से मेरा लंड छोड़ा नहीं जा रहा था. बड़ी मुश्किल से उठी. पर जब मंजू ने कहा "चल अब तक वैसे ही साड़ी लपेटे बैठी है, चल नंगी हो और अपना दूध दे जल्दी, बाबूजी की चाय को" तो तपाक से उठ कर अपनी साड़ी छोड़ कर वह मेरे पास आ गयी. उसके देसी जोबन को मैं देखता रह गया. उसका बदन एकदम मांसल और गोल मटोल था, चूचियां तो बड़ी थीं ही, चूतड़ भी अच्छे खासे बड़े और चौड़े थे. गर्भावस्था में चढ़ा मांस अब तक उसके शरीर पर था. जांघें ये मोटी मोटी और पाव रोटी जैसी फ़ूली बुर, पूरी बालों से भरी हुई. मैं तो झड़ने को आ गया.

"जल्दी दूध डाल चाय में" मंजू ने उसे खींच कर कहा. गीता ने अपनी चूंची पकड़कर चाय के कप के ऊपर लाई और दबाकर उसमें से दूध निकालमे लगी. दूध की तेज पतली धार चाय में गिरने लगी. चाय सफ़ेद होने तक वह

अपनी चूंची दुहती रही. फ़िर जाकर मेरी कमर के पास बैठ गयी और मेरे लंड को चाटने लगी.

मैंने किसी तरह चाय खतम की. स्वाद अलग था पर मेरी उस अवस्था में एकदम मस्त लग रहा था. मेरी सिर घूमने लगा. एक जवान लड़की के दूध की चाय पी रहा हूं और वही लड़की मेरा लंड चूस रही है और उसकी मां इस इंतजार में बैठी है कि कब मेरी चाय खतम हो और कब वह अपनी चूत मुझसे चुसवाये.

मैंने चाय खतम करके मंजू को बांहों में खींचा और उसके मम्मे मसलते हुए उसका मुंह चूसने लगा. मेरी हालत देख कर मंजू ने कुछ देर मुझे चूमने दिया और फ़िर मुझे लिटाकर मेरे चेहरे पर चढ़ बैठी और अपनी चूत मेरे मुंह में दे दी. "बाबूजी, अब नखरा न करो, ऐसे नहीं छोड़ूंगी आपको, बुर का रस जरूर पिलाऊंगी, चलो जीभ निकालो, आज उसीको चोदूंगी"

उधर मंजू ने मुझे अपनी चूत का रस पिलाया और उधर उसकी बेटी ने मेरे लंड की मलाई निकाल ली. गीता के मुंह में मैं ऐसा झड़ा कि लगता था बेहोश हो जाऊंगा. गीता ने मेरा पूरा वीर्य निगला और फ़िर मुस्कराते हुए आकर मां के पास बैठ गयी.

मंजू अब भी मुझपर चढ़ी मेरे होंठों पर अपनी बुर रगड़ रही थी. "क्यों बेटी. मिला प्रसाद, हो गयी तेरे मन की?"

"अम्मा, एकदम मलाई निकलती है बाबूजी के लंड से, क्या गाढ़ी है, तार तार टूटते हैं. तू तीन महने से खा रही है तभी तेरी ऐसी मस्त तबियत हो गयी है अम्मा. अब इसके बाद आधी मैं लूंगी हां!" गीता मंजू से लिपटकर बोली.

एक बार और मेरे मुंह में झड़ कर समाधान से सी सी करती मंजू उठी. "चल गीता, अब बाबूजी को दूध पिला दे. फ़िर आगे का काम करेंगे" गीता मेरे ऊपर झुकी और मुझे लिटाये लिटाये ही अपना दूध पिलाने लगी. रात के आराम के बाद फ़िर उसके मम्मे भर गये थे और उन्हें खाली करने में मुझे दस मिनिट लग गये. तब तक मंजू बाई की जादुई जीभ ने अपनी कमाल दिखाया और मेरे लंड को फ़िर तन्ना दिया.

गीता के दूध में ऐसा जादू था कि मेरा ऐसा खड़ा हुआ जैसे झड़ा ही न हो. उधर गीता मुझसे लिपट कर सहसा बोली "बाबूजी, आप को बाबूजी कहना अच्छा नहीं लगता, आपको भैया कहूं? आप बस मेरेसे तीन चार साल तो बड़े हो"

मंजू मेरी ओर देख रही थी. मैंने गीता का गहरा चुंबन लेकर कहा "बिलकुल कहो गीता रानी. और मैं तुझे गीता बहन या बहना कहूंगा. पर ये तो बता तेरी अम्मा को क्या कहूं? इस हिसाब से तो उसे अम्मा कहना चाहिये"

मंजू मेरा लंड मुंह से निकाल कर मेरे पास आ कर बैठ गयी. उसकी आंखों में गहरी वासना थी. "हां, मुझे अम्मा कहो बाबूजी, मुझे बहुत अच्छा लगेगा. आप हो भी तो मेरे बेटे जैसी उमर के, और मैं आपको बेटा कहूंगी. समझूंगी मेरा बेटा मुझे चोद रहा है. आप कुछ भी कहो बाबूजी, बेटे या भाई से चुदाने में जो मजा है वो कहीं नहीं"

मुझे भी मजा आ रहा था. कल्पना कर रहा था कि सच में मंजू मेरी मां है और गीता बहन. उन नंगी चुदैलों के बारे में यह सोच कर लंड उछलने लगा. "अम्मा, तो आओ, अब कौन चुदेगा पहले, मेरी बहना या अम्मा?"

"अम्मा, अब मैं चोदूं भैया को?" उस लड़की ने अधीर होकर पूछा.

मंजू अब तैश में थी "बड़ी आई चोदने वाली, अपनी अम्मा को तो चुदने दे पहले अपने इस खूबसूरत बेटे से. तब तक तू ऐसा कर, उनको अपनी बुर चटा दे, वो भी तो देखें कि मेरी बेटी की बुर का क्या स्वाद है. तब तक मैं तेरे लिये उनका सोंटा गरम करती हूं" मुझे आंख मार कर मंजू बाई हंसने लगी. अब वह पूरी मस्ती में आ गयी

थी.

गीता फ़टाफ़ट मेरे मुंह पर चढ़ गयी. "ओ नालायक, बैठना मत अभी भैया के मुंह पर. जरा पहले उन्हें ठीक से दर्शन करा अपनी जवान गुलाबी चूत के" गीता घुटनों पर टिक गयी, उसकी चूत मेरे चेहरे के तीन चार इंच ऊपर थी. उसकी बुर मंजू बाई से ज्यादा गुदाज और मांसल थी. झांटें भी घनी थीं. चूत के गुलाबी पपोटे संतरे की फ़ांक जैसे मोटे थे और लाल छेद खुला हुआ था जिसमें से घी जैसा चिपचिपा पानी बह रहा था.

मैंने गीता की कमर पकड़कर नीचे खींचा और उस मिठाई को चाटने लगा. उधर मंजू ने मेरा लंड अपनी बुर में लिया और मुझपर चढ़ कर मुझे हौले हौले मजे लेकर चोदने लगी. अपनी बेटी का स्तनपान देखकर वह बहुत उत्तेजित हो गयी थी, उसकी चूत इतनी गीली थी कि आराम से मेरा लंड उसमें फ़िसल रहा था.

गीताके चूतड़ पकड़कर मैंने उसकी तपती बुर में मुंह छुपा दिया और जो भाग मुंह में आये वह आम जैसा चूसा लगा. उसका अनार का कड़ा दाना मैंने हल्के से दांतों में लिया और उसपर जीभ रगड़ने लगा. दो मिनिट में वह छोकरी सुख से सिसकती हुई झड़ गयी. मेरे मुंह में रस टपकने लगा. "अरी अम्मा, भैया कितना अच्छा करते हैं. मैं तो घंटे भर बुर चुसवाऊंगी आज़"

मैं एक अजीब मस्ती में डूबा हुआ उस जवान छोकरी की चूत चूस रहा था, वह ऊपर नीचे होती हुई मेरे सिर को पकड़कर मेरा मुंह चोद रही थी और उसकी वह अधेड़ अम्मा मुझपर चढ़ कर मेरे लंड को चोद रही थी. ऐसा लग रहा था जैसे मैं साइकल हूं और ये दोनों आगे पीछे बैठकर मुझपर सवारी कर रही हैं. मैं सोचने लगा कि अगर यह स्वर्ग नहीं तो और क्या है.

गीता हल्के हल्के सीत्कारियां भरते मंजू से बोली "अम्मा, चूचियां कैसी हल्की हो गयी हैं, भैया ने पूरी खाली कर दीं चूस चूस कर. तू देख ना, अब जरा तन भी गयी हैं नहीं तो कैसे लटक रही थीं."

मेरी नाक और मुंह गीता की बुर में कैद थे पर आंखें बाहर होने से उसका शरीर दिख रहा था. मैंने देखा कि मंजू ने पीछे से अपनी बेटी के स्तन पकड़ लिये थे और प्यार से उन्हें सहला रही थी.

"सची बेटी, एकदम मुलायम हो गये हैं. चल मैं मालिश कर देती हूं, तुझे सुकून मिल जायेगा." मंजू बोली. मुझे दिखते हाथ अब गीता के स्तनों को दबाने और मसलने लगे. फ़िर मुझे चुम्मे की आवाज आयी. शायद मां ने लाड़ से अपनी बेटी को चूम लिया था. मुझे लगने लगा कि ये मां बेटी का सादा प्रेम है या कुछ गड़बड़ है?

दस मिनिट बाद उन दोनों ने जगह बदल ली. मैं अब भी तन्नाया हुआ था और झड़ा नहीं थी. मंजूबाई एक बार झड़ चुकी थी और अपनी चूत का रस मुझे पिलाना चाहती थी. गीता दो तीन बार झड़ी जरूर थी पर चुदने के लिये मरी जा रही थी.

मंजू तो सीधे मेरे मुंह पर चढ़ कर मुझे बुर चुसवाने लगी. गीता ने पहले मेरे लंड का चुम्मा लिया, जीभ से चाटा और कुछ देर चूसा. फ़िर लंड को अपनी बुर में घुसेड़कर मेरे पेट पर बैठ गयी और चोदने लगी. मेरे मन में आया कि मेरे लंड को चूसते समय अपनी मां की बुर के पानी का स्वाद भी उसे आया होगा.

गीता की चूत मंजू से ज्यादा ढीली थी. शायद मां बनने के बाद अभी पूरी तरह टाइट नहीं हुई थी. पर थी वैसी ही मखमली और मुलायम. मंजू ने उसे हिदायत दी "जरा मन लगा कर मजे लेकर चोद बेटी नहीं तो भैया झड़ जायेंगे. अब मजा कर ले पूरा"

गीता ने अपनी मां की बात मानी पर सिर्फ़ कुछ मिनिट. फ़िर वह ऐसी गरम हुई कि उछल उछल कर मुझे पूरे जोर से चोदने लगी. उसने मुझे ऐसे चोदा कि पांच मिनिट में खुद तो झड़ी ही, मुझे भी झड़ा दिया. मंजू अभी और मस्ती

करना चाहती थी इसलिये चिढ़ गयी. मेरे मुंह पर से उतरते हुए बोली "अरी ओ मूरख लड़की, हो गया काम तमाम? मैं कह रही थी सबर कर और मजा कर. मैं तो घंटों चोदती हूं बाबूजी को. अब उतर नीचे नालायक"

मंजू ने पहले मेरा लंड चाट कर साफ़ किया. फ़िर उंगली से गीता की बुर से बह रहे वीर्य को साफ़ करके उंगली चाटने लगी "ये तो परशाद है बेटी, एक बूंद भी नहीं खोना इसका. तू जरा टांगें खोल, ठीक से साफ़ कर देती हूं" उसने उंगली से बार बार गीता की बुर पोंछी और चाटी. फ़िर झुक कर गीता की जांघ पर बहे मेरे वीर्य को चाट कर साफ़ कर दिया. मेरे मन में फ़िर आया कि ये क्या चल रहा है मां बेटी में.

दोपहर का खाना होने के बाद गीता ने फ़िर मुझे दूध पिलाया और चुदाई का एक और दौर हुआ. शाम को उठकर मैं क्लब चला गया. रात को वापस आया तो खाने के बाद फ़िर एक बाद गीता का दूध पिया और फ़िर मां बेटी को पलंग पर आजू बाजू सुलाकर बारी बारी चोदा. गीता के दूध की अब मुझे आदत होने लगे थी.

दूसरे दिन रविवार था. मैंने थोड़ा अलग प्रोग्राम बनाया. सुबह गीता का दूध पिया और फ़िर दोनों मां बेटी की चूत चूस कर उन्हें खुश किया. बस मेरे लंड को हाथ नहीं लगाने दिया. मैं दोपहर तक उसे और तन कर खड़ा करना चाहता था.

मंजू बाई मेरे दिल की बात समझ गयी, क्योंकि ये हर रविवार को होता था. अपने चूतड़ों को सहलाती हुई अपनी बेटी से बोली "गीता बिटिया, आज दोपहर को मेरी हालत खराब होने वाली है" गीता ने पूछा तो कोई जवाब नहीं दिया. मैं भी हंसता रहा पर चुप रहा. मंजू की आंखों में दोपहर को होने वाले दर्द की चिंता दिख रही थी.

दोपहर को हम नंगे होकर मेरे बेडरूम में जमा हुए. मेरा कस कर खड़ा था. गीता ललचा कर मेरे सामने बैठ कर उसे चूसने की कोशिश करने लगी तो मैंने रोक दिया. "रुक बहना, तुझे बाद में खुश करूंगा, पहले तेरी इस चुदैल मां की गांड मारूंगा. हफ़्ता हो गया, अब नहीं रहा जाता. चल अम्मा, तैयार हो जा"

मंजू चुपचाप बिस्तर पर ओंधी लेट गयी "अब दुखेगा रे मुझे, देख कैसे खड़ा है बाबूजी का लंड मूसल जैसा"

गीता समझ गयी कि उसकी मां सुबह से क्यों घबरा रही थी. बड़े उत्साह से मेरी ओर मुड़ कर बोली "भैया, मेरी मार लो, मुझे मजा आयेगा. बहुत दिनों से सोच रही थी कि गांड मरवाने का मजा मिले. उंगली डाल कर और मोमबत्ती घुसेड़ कर कई बार देखा पर सुकून नहीं मिला. आप से अच्छा लंड कहां मिलेगा मरवाने को?"

मैं तैयार था, अंधे को क्या चाहिये दो आंखें! नई कोरी गांड में घुसने की कल्पना से ही मेरा लंड और उछलने लगा था.

मंजू जान छूटने से खुश थी "अरे मेरी बिटिया, तूने मेरी बचा ली आज . चल मखखन से मस्त चिकनी कर देती हूं तेरी गांड, दुखेगा नहीं"

गीता को ओंधा लिटा कर उसने उसके गुदा में और मेरे लंड को मखखन से खूब चुपड़ दिया. मैं गीता पर चढ़ा तो मंजू ने अपनी बेटी के चूतड़ अपने हाथ से फ़ैलाये. उसके भूरे गुलाबी छेद पर मैंने सुपाड़ा रखा और पेलने लगा. सुपाड़ा सूज कर बड़ा हो गया था फ़िर भी मखखन के कारण फ़च्च से एक बार में अंदर घुस गया. गीता को जम कर दुखा होगा क्योंकि उसका शरीर ऐंठ गया और वह कांपने लगी. पर छोकरी हिम्मत वाली थी, मुंह से उफ़ तक नहीं निकली.

उसे संभलने का मौका देने के लिये मैं एक मिनिट रुका और फ़िर लंड अंदर घुसेड़ने लगा. इस बार मैंने कस के एक धक्के में लंड सट्ट से उसके चूतड़ों के बीच पूरा गाड़ दिया. अब वह बेचारी दर्द से चीख पड़ी. सिसकते हुए बोली "मां ऽ, मर गयी मैं, भैया ने गांड फ़ाड़ दी. देख ना अम्मा, खून तो नहीं निकला!"

मंजू उसे चिढ़ाते हुए बोली "आ गयी रस्ते पर एक झटके में? बातें तो पटर पटर करती थी कि गांड मराऊंगी. पर रो मत, कुछ नहीं हुआ है, तेरी गांड सही सलामत है, बस पूरी खुल गयी है चूत जैसी. बेटा, तूने भी कितनी बेरहमी से डाल दिया अंदर, धीरे धीरे पेलना था मेरी बच्ची के चूतड़ों के बीच जैसे मेरी गांड में पेला था."

"अरे अम्मा, ये मरी जा रही थी ना गांड मराने को! तो सोचा कि दिखा ही दूं असली मजा. वैसे गीता बहना की गांड बहुत मोटी और गुदाज है, डनलोपिलो की गद्दी जैसी, इसे तकलीफ़ नहीं होगी ज्यादा" मैंने गीता के चूतड़ दबाते हुए कहा. मेरा लंड अब लोहे की सूली जैसा उसके चूतड़ों की गहरायी में उतर गया था.

गीता की गांड बहुत गुदाज और मुलायम थी. मंजू जितनी टाइट नहीं थी पर बहुत गरम थी, भट्टी जैसी. मै उस पर लेट गया और उसके मम्मे पकड़ लिये. उसके मोटे चूतड़ स्पंज की गद्दी जैसे लग रहे थे. उसकी चूंचियां दबाते हुए मैं धीरे धीरे उसकी गांड मारने लगा.

शुरू में हर धक्के पर उसके मुंह से सिसकी निकल जाती, बेचारी को बहुत दर्द हो रहा होगा. पर साली पक्की चुदैल थी. पांच मिनिट में उसे मजा आने लगा. फ़िर तो वह खुद ही अपनी कमर हिला कर मरवाने की कोशिश करने लगी. "भैयाजी, मारो ना! और जम कर मारो, बहुत मजा आ रहा है! हाय अम्मा, बहुत अच्छा लग रहा है, तेरे को क्यों मजा नहीं आता? भैया, मारो मेरी गांड हचक हचक कर, पटक पटक कर चोद मेरी गांड को, मां कसम मैं मर जाऊंगी"

मैंने कस कर गीता की मारी, पूरा मजा लिया. मैं बहुत देर उसके चूतड़ चोदना चाहता था इसलिये मंजू को सामने बैठाकर उसकी बुर चूसने लगा, नहीं तो बेचारी अपनी बेटी की गांड चुदती देख कर खुद अपनी चूत में उंगली कर रही थी.

मन भर कर मैंने गीता की गांड चोदी और फ़िर झड़ा. बचा दिन बहुत मजे में गया. छुटी होने के कारण दिन भर चुदाई चली. गीता के दूध का मैं ऐसा दीवाना हो गया था कि चार घंटे भी नहीं रुकता था. हर घंटे उसकी चूंचियां चूस लेता, जितना भी दूध मिलता पी जाता. रात को मैंने मंजू से कहा कि गीता को गाय जैसा दुह कर गिलास में दूध निकाले. मेरी बहुत इच्छा थी इसे देखने की.

मंजू ने गीता के बाजू में बैठकर उसके हाथ में गिलास थमाया. गीता ने उसे अपनी चूची की नोक पर पकड़कर रखा और मंजू ने अपनी बेटी के मम्मी दबा दबा कर दूध निकाला. गीता के निपल से ऐसी धार छूट रही थी कि जैसे सच में गाय हो. पूरा दूध निकालने में आधा घंटा लग गया. बीच में मैं गीता का चुम्मा लेता और कभी उसके सामने बैठ कर उसकी बुर चूस लेता.

दुहने का यह कार्यक्रम देख कर मुझे इतना मजा आया कि मेरा कस कर खड़ा हो गया. गिलास से दूध पीकर मैंने फ़िर एक बार गीता की गांड मारी. मंजू बहुत खुश थी कि गीता के आने से उसकी गांड की जान तो छूटी.

दूसरे दिन मुझे टूर पर जाना पड़ा. दोनों मां बेटी बहुत निराश हुईं. उन्हें भी मेरे लंड का ऐसा चस्का लगा था कि मुझे छोड़ने को तैयार नहीं थीं. मैंने समझाया कि आकर चुदाई करेंगे, मेरे लंड को भी आराम की जरूरत थी. गीता को मैंने सख्त हिदायत दी कि मेरी गैरहाजिरी में अपना दूध निकाल कर फ़्रिज में रख दे, मैं आ कर पियूंगा.

मैं दो दिन बाद शाम को वापस आने वाला था. पर काम जल्दी खतम हो जाने से दोपहर को ही आ गया. सोचा अब आफ़िस न जाकर सीधा घर चल कर आराम किया जाये. लैच की से दरवाजा खोला. मुझे लगा था कि अभी वे दोनों घर में नहीं होंगी, मेरी गैरहाजिरी में गांव चली गयी होंगी. पर जब घर के अंदर आया तो बेडरूम से हंसने की आवाज आयी. मैं दबे पांव बेडरूम के दरवाजे तक गया और उसे जरा सा खोल कर अंदर देखने लगा. जो देखा उससे मेरा लंड तुरंत तन्ना गया.

उस दिन चोदते समय मां बेटी के चुम्मे और मंजू ने जिस तरह गीता के मम्मे सहला दिये थे, उसे देखकर मेरे मन में जो संदेह उठा था वह सच था. मां बेटी के बीच बड़ी मतवाली प्रेम लीला चल रही थी. मंजू बाई बिस्तर पर सिरहाने से टिक कर बैठी थी. गीता उसकी गोद में थी. मंजू उसके बार बार चुंबन ले रही थी. मंजू का एक हाथ गीता की चूंचियों को दबा रहा था और दूसरा हाथ गीता की चूत से लगा था. अपनी दो उंगलियों से वह गीता की बुर खोद रही थी. गीता अपना मां के गले में बाहें डाले उसके चुम्मों का जवाब दे रही थी. बीच बीच में मां बेटी जीभ लड़ातीं और एक दूसरे की जीभ चूसने लगतीं.

मैं अंदर जाना चाहता था पर अपने लंड को मुठियाता हुआ वहीं खड़ा रहा. सोचा जरा देखें तो आगे ये चुदैल मां बेटी क्या करती हैं.

गीता बोली "अम्मा, बहुत अच्छा लग रहा है. तू कितनी मस्त करती है मेरी बुर को. पर चूचियां फ़िर टपक रही हैं, बर्तन ले आ ना रसोई से और निकाल दे मेरा दूध. बहुत भारी भारी लग रहा है."

मंजू गीता को चूम कर बोली "कोई जरूरत नहीं बिटिया, दो दिन में ही सेर भर दूध जमा हो गया है बाबूजी के लिये, उनको बहुत है, इससे ज्यादा वो क्या पियेंगे?"

गीता मचल कर बोली "पर मैं क्या करूं अम्मा? बहुत दुख रही हैं चूचियां"

मंजू ने झुक कर उसके मम्मे को प्रेम से चूमते हुए कहा "तो मैं काहे को हूं मेरी रानी? मैं खाली कर देती हूं दो मिनिट में!"

गीता मंजूबाई से लिपटकर खुशी से चहक पड़ी "सच अम्मा? बड़ी छुपी रुस्तम निकली तू? मुझे नहीं पता था कि तुझे मेरे दूध की आस होगी!"

मंजू बाई गीता को नीचे लिटाते हुए बोली "मुझे तो बहुत दिन की आस है बेटी, सिर्फ़ तेरे दूध की ही नहीं, तेरे बदन की भी आस है. जब से बाबूजी से चुदाई शुरू हुई है, मेरे दिल में आग सी लग गयी है. मैं तो उनके सामने ही पी लेती पर क्या पता वे नाराज न हो जायें इसलिये चुप रही. उनके हिस्से का दूध पीने में हिचक होती थी. अब आ, तेरी छाती हल्की कर दूं, फ़िर तेरी बुर हल्की करूंगी"

गीता के बगल में लेट कर मंजू ने अपनी बेटी की चूंची मुंह में ले ली और आंखें बंद करके पीने लगी. उसके चेहरे पर एक अजीब तृप्ति झलक रही थी. गीता ने अपनी मां का सिर छाती से लगा लिया और उसे दूध पिलाने लगी. मंजू के बालों में प्यार से उंगलियां चलाती हुई बोली "पता है अम्मा, सब मां अपने बच्चों को दूध पिलाती हैं, मैं पहली बेटी हूं जो मां को दूध पिला रही है"

मंजू ने दस मिनिट में दोनों चूंचियां खाली कर दी. अब तक वे दोनों ऐसी गरम हो गयी थीं कि लिपट कर एक दूसरे पर चढ़ कर चूमते हुए कुश्ती खेलने लगीं. फ़िर मंजू उलटी गीता पर लेट गयी और उसकी टांगें फ़ैलाकर उसकी बुर में मुंह डाल दिया. गीता ने भी अपनी मां की जांघों के बीच अपनी चेहरा छुपा लिया. चूसने चाटने और सिसकियों की आवाज कमरे में गूंजने लगी.

मां बेटी की यह रति देखकर मेरा सब्र टूट गया. नंगा होकर मैं कमरे में घुसा और पलंग पर चढ़ बैठा.

मुझे देख कर दोनों सकपका गयीं और अलग होने लगीं. मैंने उन्हें रोका और अपना काम करते रहने को कहा. मेरे खड़े लंड को देखकर उनकी जान में जान आयी कि मैं नाराज नहीं हूं बल्कि उनकी इस रति में शामिल होना चाहता हूं. एक दूसरे की चूत वे छोड़ना नहीं चहती थीं. गीता ने अपनी गांड की ओर इशारा किया. मंजू ने अपने

मुंह से गीता की गांड चूस कर उसे गीला किया और फ़िर मेरे लंड को भी चूस दिया. मंजू को नीचे पटककर गीता ऊपर चढ़ गयी और मंजू ने उसके चूतड़ पकड़कर मुझे इशारा किया.

आज मखखन न होने से गीता को ज्यादा दुखा पर वह मां की बुर चूसने में इतनी मस्त थी कि बस एक दो बार कराह कर रह गयी. मैंने मंजू का थूक सूखने के पहले लंड पूरा गीता की गांड में उतार दिया और फ़िर उनपर चढ़ कर गीता की गांड मारने लगा.

सूखी गांड मारने में बहुत मजा आया क्योंकि लंड को उसकी गांड कस कर पकड़ी थी. गीता मेरे हर धक्के पर सी सी कर उठती पर मां की बुर चूसना उसने नहीं बंद किया. मंजू भी नीचे से अपनी बेटी की चूत चूस रही थी और मेरे चूतड़ों को हाथ से दबा कर मुझे उकसा रही थी कि और जोर से मारो. गीता की सुगंधित वेणी में बंधी चोटियों में मुंह छुपा कर मैं कस के उसकी मार रहा था. नीचे ही मंजू की बुर दिख रही थी जिसमें गीता मुंह चला रही थी. मैं भी मौका देख कर बीच बीच में स्वाद ले लेता.

झड़ने के बाद मैंने उन दोनों की खूब चुटकी ली "अरे अम्मा, ये तो गजब हो गया. मां बेटी की आपस में ऐसी चुदाई किसको देखना नसीब होता है? अब तो तुम लोगों को मेरी जरूरत नहीं है, जब चाहो जुट सकती हो"

दोनों थोड़ी शरमाई पर मंजू बोली "बेटा, तुम्हारे लंड के बिना तो हम जी नहीं सकते. तुमने चोद चोद कर हमें ऐसा गरम कर दिया है कि अब तुम न हो तो हम मां बेटी को अपनी चूत की खुजली बुझाने का और कोई रास्ता नहीं है. पर मजा बहुत आता है मेरी बेटी के साथ ऐसा करके"

मैंने उसे फ़्रिज़ में से गीता का दूध लाने को कहा. वह एक बड़ा बर्तन ले आयी. डेढ़ लिटर के करीब दूध होगा. मैंने आधा पी लिया, फ़िर पेट भर गया. मेरे कहने पर मंजू बाई ने बाकी का पी डाला.

मैंने पूछा कि दो दिन में इतना कैसे दूध जमा हो गया तो बोली "बाबूजी, तुमसे चुदवा चुदवा कर गीता ऐसी खिल गयी है कि अब डबल दूध बनता है उसकी छाती में. फ़िर आप और मैं बार बार इसकी चूंचियां दबाते हैं उससे भी दूध और ज्यादा बनता है. मैं सोच रही थी कि इतने दूध का क्या करें? अगर आप को ऐतराज न हो, तो मैं भी पी लिया करूंगी. मुझे बहुत मीठा लगा अपनी बिटिया का दूध. अब ये दुधारु गाय अपन दोनों के लायक दूध देगी"

और इसके बाद सच में हमें घर का दूध मिलने लगा. इतना दूध गीता देती है कि मैं और मंजू पेट भर पीते हैं और चाय में भी डालते हैं. हमारी चुदाई में भी मां बेटी के आपसी प्यार से एक मिठास आ गयी है. अब मैं कितना भी थका होऊं, मेरा लंड खड़ा करने को इतना ही काफ़ी है कि मां बेटी की आपस की चुदाई देख लूं. वे अब मेरी फ़रमाइश पर आपस में तरह तरह के कामकर्म करके दिखाती हैं.

––– समाप्त –––